CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वाराणसीस्थ श्रीरामानन्दसम्प्रदायाचार्य श्री श्रीमज्जगद्गुरु श्री रामानन्दाचार्यजी महाराजकी

जगद्गुरु श्री रामानन्दाचार्य-रामप्रपन्नाब्जे

योगीन्द्र प्रवर्त्तित त्रिमाता द्वारकाक्षेत्र श्री श्रीमन्मठ संस्थानिक

ज.गु.श्री रामानन्दाचार्य-पीठ

सचित्र धार्मिक मासिक

कार्यालय 卐 आचार्यपीठ श्री क्षोणलेन्द्रमठ सरखेजरोड
पो० पालडी अहमदाबाद ३८०००७

संरक्षक 卐 शेठ श्री अमरशी कुरशी पंजिठिया

सम्पादक 卐 जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्यजी

सहसम्पादक 卐 पं. श्री शरचन्द्र शास्त्री

व्यवस्थापक 卐 म. म. स्वामी रामावतारदासजी (रत्न)

प्रकाशक 卐 स्वामी सीतारामाचार्य

R.L.O. 24.8.93 CALCUTTA

भाद्रेऽसित निशिथेऽथ रोहिण्यामष्टमीतिथौ ।
सिंहमर्के गते सौम्येकृष्णो जातो विधूदये ॥
(श्रीवैष्णवमताब्जभास्करः)

वर्ष १५ विक्रमाब्द २०५० अङ्क ६
श्रीरामानन्दाब्द ६९३ अगस्त १९९३

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्य श्रीरामप्रपन्नाचार्यजी

योगीन्द्र

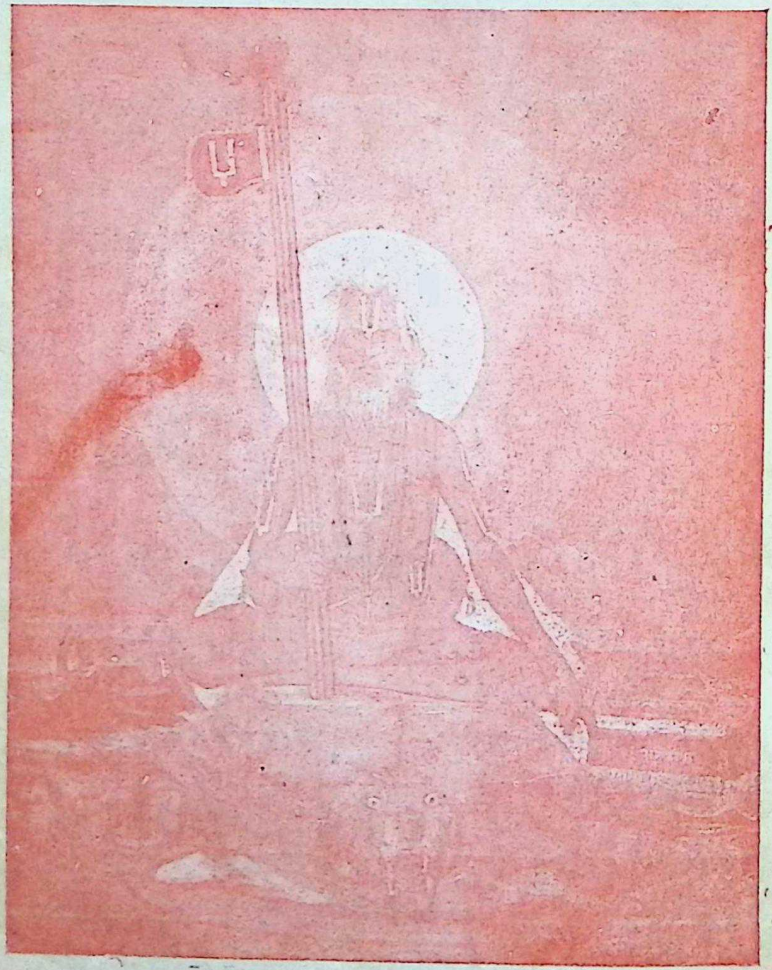

(१९४४-२०४६)

चतुर्थ श्रीसाकेत गमनोत्सव के उपलक्ष्य में

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्य रामप्रपन्नाचार्यजी

॥ योगीन्द्र का जीवन चक्र ॥

१ जन्मनामः—श्री रामप्रसादजी ।

२ दीक्षा नामः—श्री रामप्रपन्नाचार्यजी ।

३ अन्य नाम, उपनाम, उपाधि आदिः—योगीराज, योगीन्द्र यतिराज ।

४ सम्प्रदायः—श्री रामानन्द सम्प्रदाय ।

५ सम्प्रदाचार्य/द्वाराचार्यः—श्री सम्प्रदाय—श्रीरामानन्द सम्प्रदाय के चालीसवें आचार्य ।

६ पिता श्री का नामः—श्री विश्वम्भर प्रसादजी 'आनन्द वर्धन' ।

७ मातु श्री का नामः—सुश्री गुलाबदेवीजी ।

८ सम्प्रदाय गुरु श्री का नामः—महामहोपाध्याय जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्य श्रीरघुवराचार्यजी वेदान्तकेशरी

९ अन्य गुरुजनों के नामः—देवप्रयाग स्थित एक सिद्ध महात्माजी योग गुरु ।

१० प्रधान शिष्यों के नामः—जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्य श्री रामेश्वरानन्दाचार्यजी ।

११ गोत्र—जाति—वर्णः—त्रिप्रवरान्वित वशिष्ठगोत्रीय शुक्लयजुर्वेदीय वाजसनेयशाखाध्यायी कान्यकुब्ज ब्राह्मण ।

१२ जन्मतिथिः—चैत्र. शुक्ल नवमी (श्री रामनवमी) वि.स. १९४४ श्री रामानन्दाब्द ५८८

१३—दीक्षा—शिक्षा—विक्रमसम्वत १९७८ई.स. १९२२ के उज्जैन महाकुम्भ पर्व के अवसर पर जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्य

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीरघुवराचार्य वेदान्त केशरोजी के शरणापन्न होकर सविधि श्रीरामानन्द सम्प्रदाय के विधानानुसार पञ्चसंस्कार पूर्वक दीक्षा शिक्षा ग्रहणकर सविधि सर्वशास्त्राध्ययन एवं योगसाधना में विशिष्ट कुशलता प्राप्ति ।

१४–**आचार्यपदाभिषेक**–विक्रम सम्वत २००९ मार्गशीर्षशुक्ल ३ मंगलवार दि० २०।११।१९५२ को पश्चिमाम्नाय जगद्गुरु श्री रामानन्दाचार्यपीठ–विश्रामद्वारका श्रीशेषमठ (शींगडा) पोरबन्दर सौराष्ट्र में सरकार एवं समाज द्वारा जगदाचार्यत्वेन अभिषेक ।

१५–**पोरबन्दर में प्रतिष्ठा**–सुदामापुरी (पोरबन्दर) में श्री जानकी मठ (विश्रामद्वारका–श्रीशेषमठ की शाखा) का आमूल जीर्णोद्धार कर भव्य शिखर बन्ध मन्दिर का निर्माण कर श्रीरामनवमी विक्रमसम्वत २०१६ दि० ५।४।१९६० मंगलवार के दिन विशेष समारोह के साथ श्री अवधविहारीजी की प्रतिष्ठा करवाये ।

१६–**अहमदाबाद**–भारत का प्रमुखनगर एवं गुजरात की राजधानी साबरमती के तट पर तपोपूत श्रीमोरंचि तपोभूमी में श्रीरामनवमी विक्रम सम्वत २०१७ दि०२५।३।१९६१ शनिवारके दिन जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्यपीठ–श्रीकोसलेन्द्रमठ की स्थापना के साथ अतिभव्य चित्ताकर्षक पाषाणमय शिखर बन्ध मन्दिर बंधवाकर १०८ श्रीरामार्चा महापूजा श्रीराममहायागों के आयोजन के साथ बडे समारोह से श्रीसाकेत विहारीजी की प्रतिष्ठा करवाये ।

१७ **महाविद्यालय की स्थापना**–विजयादशमी विक्रमसम्वत २०१९ दि०२८।९।१९६३ शनिवारको जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्य पीठ का प्रधान अंगभूत शिक्षा संस्था श्रीरघुवर रामानन्द वेदान्त महाविद्यालय की स्थापना की ।

१८ **आचार्य श्री की मूर्ति प्रतिष्ठा**–श्रीरामनवमी विक्रमसम्वत २०२७ दि०४।३।१८७१ रविवार को जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्य पीठ के परिशर में चित्ताकर्षक शिखर बन्ध मंदिर बनवाकर श्री योगेश्वर महादेव, निकुम्भिलामर्दक श्रीहनुमानजी श्रीसिद्धेश्वरहनुमानजी, श्रीअम्बामाताजी, श्रीपार्वती माताजी, श्री गणपतिजी एवं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रस्थानत्रयानन्दभाष्यकार जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्यजी के श्रीविग्रहों की प्रतिष्ठा करवाये ।

१९. त्रिदण्डग्रहण–श्रीरामानन्द सम्प्रदाय में लगभग सात सौ वर्षों से जगद्गुरु श्रीअन्तानन्दाचार्यजी (वि.सं.१३६३–१५४०) तथा जगद्गुरु श्रीभावानन्दाचार्यजी (वि.सं.१३७६–१५३९) के बाद शीथिल प्रायः त्रिदण्डधारण प्रथा को श्रीरामनवमी विक्रमसम्वत २०२९ दि०१२।४।१९७३ को शास्त्रीय विधानानुसार त्रिदण्डग्रहण कर समाज में पुन जागरण का क्रान्ति की ज्योति जगाये ।

२०–दि० ३।४।१९७४ को नेपाल आदि देशों की विजय यात्रा इस प्रसंग में दि०१७।४।७४ को मोतीहारी में नेपाल सरकार के प्रतिनिधि अञ्चलाधीश श्री के० एस. प्रधान द्वारा राष्ट्र की ओर से जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्यत्वेन परम्परागत नियम से स्वागत । दि० २०।४।७४ को वाल्मीकि अध्ययन संस्थान श्रीत्रिभुवनविश्व-विद्यालय में वहां के समस्त पण्डितों द्वारा ससम्मान्न स्वागत ।

२१–दि०२५।४।१९७४ को वर्तमान सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी के कुलपति पण्डित प्रवर श्रीबद्रीनाथशुकल जी के अध्यक्षत्व में काशीस्थ पण्डित वर्गों तथा नागरिकों द्वारा जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्यत्वेन स्वागत । उसी दिन श्रीरामानन्द संस्कृत महाविद्यालय कर्णघण्टा वाराणसी के अध्यापक तथा छात्रों द्वारा भव्य स्वागत ।

२२– दि०१२।१।१९७७ ई० को शंकुधारा–वाराणसी में आनन्दभाष्यकार जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्यपीठ की स्थापना उसी दिन वाराणसी के विशिष्ट विद्वत्परिषद् द्वारा साभिनन्दन पत्र जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्यत्वेन विशेष स्वागत जिसमें पण्डितराज श्रीराजेश्वर शास्त्री पण्डितराज श्रीरघुनाथशर्मा पण्डितराज श्रीकेदारनाथओझा पण्डितराज श्रीकालीप्रसाद मिश्र पण्डित श्री देवस्वरूपमिश्र सं.सं.वि. वि. के सम्मान्य कुलपति पण्डित श्री करुणापति त्रिपाठीजी पण्डित श्रीरामपाण्डेय प्रभृति अनेक उल्लेखनीय विभूतियां उपस्थित थी।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

२३–उसी दिन श्रीरामानन्दयुवकसंघ के सम्मान्य मंत्री महानुभाव महन्त श्रीरामविलासदासजी वेदांती श्रीमहावीरदासजी वेदांती प्रभृति ने आचार्यपीठस्थल में जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्यत्वेन स्वागत किया

२४–अनेक लक्ष रुपये व्ययकर श्रीरामानन्द विद्यालय भवन का निर्माण एवं श्रीद्वारकाधीश मंदिर का जीर्णोद्धार करवाये ।

२५–दि०१०।११।१९८५ धनत्रयोदशी को श्रीआनन्दभाष्य मुद्रणालय की स्थापना करवाई जिस मुद्रणालय से मुद्रित होकर श्री रामानन्द वेदान्त दर्शन के शताधिक पुस्तकें प्रकाशित हुई एवं जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्यपीठ पत्रिका समाजसेवा में संलग्न है ।

२६ **अस्तित्वकालः**–वि.स.१९४४से२०४६ (लगभग१०२वर्ष)

२७ **जन्म स्थानः**–वाराणसी उत्तर प्रदेश

२८ **सम्प्रदाय पीठ** स्थानः–जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्यपीठ, श्री शेषमठ विश्रामद्वारका शींगडा, वाया, पोरबन्दर सौराष्ट्र, आनन्दभाष्यकार जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्यपीठ शंकुधारा वाराणसी जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्य पीठ अहमदाबाद–३८०००७

२९ **साकेतवास स्थलः**–जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्यपोठ सरखेज रोड पालडी, अहमदाबाद–७

३० **सम्प्रदायी ग्रन्थ रचनायेः**–(१) नव्य न्याय जागदीशी व्यधिकरण की दीपिका–संस्कृत टीका (२) वेद रहस्य की हिन्दी टीका (३) सिद्धान्त दीपिका की किरणावलि संस्कृत टीका (४) ब्रह्म सूत्र आनन्दभाष्य की संस्कृत टीका (५) श्रीरघुवरीय वृत्ति विवरण संस्कृत टीका (६) योगसूत्र विवरण (संस्कृत) (७) तत्त्वत्रयसिद्धि मौलिकवाद प्रबन्ध (८) नव्य न्याय खंडनोद्धार दिपिका हिन्दी टीका (९) वेदार्थ चन्द्रिका मौलिक, वाद प्रबन्ध (१०) अध्यासध्वंसलेश की संस्कृत टीका, (११) श्वेताश्वतरोपनिषद् में श्री रामानन्द भाष्यम्, (१२) चिदात्म प्रकाश टीका (१३) न्याय दिपिका टीका आदि ।

३१ **साकेत गमन** भाद्रकृष्ण नवमी शुक्रवार श्रीरामानन्दाब्द ६८९ विक्रम सम्वत् २०४६ दि०२५–८–१९८९ के ब्रह्ममूहुर्त में श्रीसाकेत गमन ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

॥ रामचन्द्र कृष्णचन्द्र ॥

[ले० दर्शनकेसरीसमीक्षासम्राट् बैदेहीकान्तशरण]

कृष्णाष्टमी के अवसर पर पण्डितगण श्रीराधाकृष्ण मन्दिर में एकत्रित हुये थे। एक पण्डित को देखकर दूसरे पण्डित के मन में शास्त्रार्थ की खुजलाहट उत्पन्न हो जाती है। अतः पं. उक्कठ ठाकुर ने सभी पण्डितों से सीधा प्रश्न पूछा—"रामचन्द्र और कृष्णचन्द्र का क्या अर्थ है ?

पं. ज्योतिषानन्द ने "प्रत्यक्षं ज्योतिषं शास्त्रं चन्द्रार्कौ यत्र साक्षिणौ" का स्मरण करते हुये बोले—"चन्द्र का अर्थ चन्द्रमा सभी जानते ही हैं। कृष्ण का अर्थ काला और राम का अर्थ श्वेत (शुक्ल) भी सभी को ज्ञात ही है। अतः कृष्णचन्द्र का अर्थ है कृष्ण पक्ष का चन्द्र और रामचन्द्र का अर्थ है शुक्ल पक्ष का चन्द्र।

पं. विनोदीझा ने इसका समर्थन करते हुये कहा—श्रीरामचरित मानस के आरम्भ में ही लिखा है—"सम प्रकाश तम पाख दुहुं, नाम भेद विधि कीन्ह। शशि शोषक पोषक समुझि, जग यश अपयश दीन्ह ॥बां. ७॥" अर्थात—कृष्ण पक्ष और शुक्ल पक्ष दोनों ही पक्षों में तम (अन्धकार) और प्रकाश (बराबर) ही होता है किन्तु कृष्ण पक्ष में प्रकाश प्रतिक्षण क्षीयमान होने से शशि शोषक है और प्रतिक्षण मन्द होता जाता है। इसलिये संसार उसको अपयश देकर कृष्ण (काला) पक्ष कहता है और शुक्ल पक्ष में प्रकाश प्रतिक्षण वर्धमान होने से शशिपोषक है और प्रतिक्षण बढता रहता है। इसलिये संसार उसको यश देकर शुक्ल पक्ष कहता है। परन्तु दोनों ही पक्षों में प्रकाश और तम की मात्रा बराबर ही रहती है। "पक्षौ पूर्वापरौ शुक्लकृष्णौ अ.कौ' में भी प्रथम शुक्ल पक्ष की ही गणना कर शुक्लपक्ष की ही प्राथमिकता या प्रधानता दी गयी है और मासगणना शुक्लादि होता है।

पं. कृष्णानन्दजी को यह उत्तर कृष्णचन्द्र की अवमान्यता और रामचन्द्र की प्रधानता की गन्ध महसूस की अनुभूति हुई। अतः वे इसका प्रत्याख्यान करते हुये बोले—नहीं, हमारे यहां

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कृष्णादि मास गणना होती है । श्रीकृष्णचन्द्र का अवतार कृष्ण पक्ष में ही हुआ । कृष्णपक्ष में ही बांस काटने पर उसमें घून (कीडा) नहीं लगता है । कृष्ण पक्ष में ही मूंग (दलहन) बाओ करने पर फसल अच्छा होता है । कृष्णपक्ष में ही मधु सञ्चित प्राप्त होता है । इसके विपरीत शुक्लपक्ष के पूर्णचन्द्र में ही ग्रहण दोष होता है ।

पं रामानन्दजी ने इसका उत्तर देते हुए कहा—श्रीरामचन्द्र का अवतार शुक्लपक्ष में ही हुआ । यज्ञोपवीत आदि शुभ कार्य शुक्ल पक्ष मे ही होते हैं । शुक्लपक्ष के द्वितीया का ही चन्द्र दर्शनीय एवं वन्दनीय है ।

पं लुत्पुत्ती झा की श्रद्धा ज्योतिष शास्त्र में नहीं थी । वे साहित्य के विद्वान् थे । अतः उन्होंने वार्ता को ज्योतिष शास्त्र से हटाकर साहित्य के क्षेत्र में मोडते हुये कहा चन्द्र नाम है खेलौना का । बच्चों को अभी भी चन्द्रमा से खेलाया जाता है "चन्दा मामा आरे आ बारे आ सोना के कटोरा में दूध भात ला । बउआ के मुंहमा में घुटूक ।" एवं चन्दामामा दूध के, पूआ पकावे गूड के अपने खाये थाली में, मुन्ना को दे प्याली में, आदि । कृष्ण भी चन्द्र खेलौना के लिये मचलते थे—"मैया री मैं तो चन्द्र खेलौना लौंगे ।" "ऐसो हठी मेरे बाल गोविन्दा, अपने कर गहि गगन बतावे खाने को मांगे चन्दा ।" इसी प्रकार श्रीराम भी चन्द्र खेलौना के आग्रही थे—"कबहूं शशि मांगत आरि करै 'कबहूं प्रतिविम्ब निहारि डरै, कबहूं करताल बजाई के नाचत, बाल सबै मिलि मोद करें । अवधेश के बालक चारि सदा तुलसी मन मन्दिर में विहरै ।" इस प्रकार कृष्ण का अर्थ है कृष्ण का खेलौना चन्द और रामचन्द्र का अर्थ है राम का खेलौना चन्द्र ।

पं ठीठुर ठाकुर प्रतिवाद करते हुये बोले—रामचन्द्र और कृष्णचन्द्र शब्द उत्तर पद प्रधान शब्द नहीं हैं प्रत्युत पूर्व पद प्रधान शब्द है । रामचन्द्र का अर्थ है—राम हो चन्द्र जिसका

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

और कृष्णचन्द्र का अर्थ है–कृष्ण हो चन्द्र जिसका। मुनीक्षण जी के चन्द्र श्रीराम थे—"अनुज जानकी सहित प्रभु, चाप बाण धरराम। मम हिय गगन इन्दु इव, बसहु सदा निहकाम' अरण्य०।

पं. लक्ष्मीपत्ती झा ने कहा—रामचन्द्र और कृष्णचन्द्र शब्द वस्तुतः उपमा अलंकार है। इसको अर्थ है चन्द्र के समान राम चन्द्र के समान कृष्ण। चन्द्र उपमा मुख के लिये कवि प्रसिद्ध है। अतः अर्थ हुआ चन्द्र के समान मुखवाला राम, चन्द्र के समान मुखवाला कृष्ण। भक्तकी उपमा चकोर से और भगवान् की उपमा चन्द्र से दी जाती है। कृष्णचन्द्र का तात्पर्य–"नयन चकोर मुख चन्द हु पर बार डारौं, बार डारौं चित्त मन मोहन चित चोर पै।...सर्बस बार डारौं बा प्रीत्रा की मरोर पै।" में तथा रामचन्द्र का तात्पर्य–"रामचन्द्र मुखचन्द्र छवि, लोचन चारु चकोर। करत पान सादर सुखद, प्रेम प्रमोद न थोर॥" में निहीत है। राम कथा शशि किरण समाना, संत चकोर करहिं जेहि पाना॥ अस कहि फिरि चितए तेहि ओरा। सिय मुख शशि भए नयन चकोरा" अधिक सनेह देह भए भोरी। शरद शशिहि जनु चितव चकोरी॥ रामहि लखनु विलोकत कैसें। शशिहि चकोर किशोर कु जैसे" आदि में भी शशिचकोर सम्बन्ध का दिग्दर्शन है।

पं. विनोदी मिश्र ने कहा–चन्द्र का उदय समुद्र का वृद्धि कारक है। कौसिक रूप पयोनिधि पावन। प्रेम बारि अवगाहु सुहावन। रामरूप राकेश निहारी। बढत बीचि पुलकावलि भारी॥" सज्जन सकृत सिंधु सम कोई। देखि पूर बिधु बाढइ जोई॥" उदयेन शशाङ्कस्य पयोधिरिव वर्धते॥" कृष्ण के मुख का स्मरण और राम के मुख का स्मरण हृदय के भक्ति सागरको बढाने वाला है।

पं ठीठुर ठाकुर ने कहा—चन्द्र का अर्थ आह्लाद (आनन्द) उत्पन्न करनेवाला है। कृष्णचन्द्र का अर्थ है कृष्ण का आनन्द अथवा कृष्ण में आनन्द। इसी प्रकार राम चन्द्र का अर्थ है

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रामका आनन्द अथवा राम में आनन्द । अथवा कृष्ण रूप आनन्द–आनन्द रूप कृष्ण एवं राम रूप आनन्द–आनन्द रूप राम है ।

पं ज्योतिषानन्द ने देखा कि वार्ता ज्योतिषशास्त्र की पटरी से हटकर साहित्य के मार्ग पर जा रही है । तब पुनः विषय वस्तु को ज्योतिष शास्त्र की ओर मोडते हुये बोले–कृष्ण का जन्म चन्द्रोदय काल में अष्टमी अर्धरात्रि में हुआ था–'कृष्णो जातो विधूदये' । अतः कृष्णचन्द्र का अर्थ है चन्द्रोदयकाल में जन्म लेने वाला । इसी प्रकार राम का जन्म भी चैत्र नवमी मध्याह्न काल में चन्द्रोदय काल में ही हुआ था (शुक्ल नवमीको मध्याह्न में ही चन्द्रोदय क्षितिज में होता है) । अतः रामचन्द्र का अर्थ है–चन्द्रोदय काल में जन्म लेने वाला । इस प्रकार जन्मकाल के लेश से कृष्ण चन्द्र और राम चन्द्र संज्ञा है ।

पं. वाचस्पति मिश्र ने विषय को व्याकरण शास्त्र की ओर मोडते हुये कहा–राम का अन्तिम वर्ण 'म' और कृष्णका अन्तिम वर्ण 'ण' का अनुस्वार (०) या चन्द्रविन्दु (ँ) हो जाता है । अनुस्वार (०) पूर्ण चन्द्राकार और चन्द्र विन्दु अर्ध चन्द्राकार होता है । अतः अन्तिम वर्ण विकारानुसार राम को रामचन्द्र और कृष्ण को कृष्ण चन्द्र कहा जाता है ।

पं. वेदानन्द झा ने विषय को वेद की ओर मोडते हुये कहा–चन्द्र आह्लाद कारक है और कल्याण पथ पर चलने चलाने वाला है–"स्वस्ति पन्थामनुचरेम सूर्याचन्द्रमसाविव । पुनर्ददता-घ्नता जानता संगमेमहि ॥ ऋ. ५।५१।१५॥ सूर्यो एकाकी चरति चन्द्रमा जायते पुनः–शु.य. ॥" चन्द्रमा अप्स्वन्तो सुपर्णो धावते दिवि । नवो हिरण्यनेमयः पदं विन्दन्ति विद्युता वित्तं मे अस्य रोदसी ॥ऋ. १।१०५।१।" "स चित्र चित्रं चितयन्तमस्मे चित्र क्षत्र चित्रतमं वयोधाम । चन्द्रं रयिं पुरुवीरं बृहन्तं चन्द्र चन्द्राभिगृणते युवस्व ॥ऋ.६।६।७।" । अतः आह्लाद कारक और कल्याण कारक होने से; राम को रामचन्द्र और कृष्ण को कृष्ण चन्द्र कहा जाता है ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पं. दर्शनानन्द व्यास विषय को वेदांत की ओर मोडते हुये बोले–"चन्द्रः कर्पूर काम्पिल्ल सुधाशु स्वर्णवारिषु–मे०' 'स्वर्णेऽपि भूरि चन्द्र द्वौ–अ.को.' के अनुसार चन्द्र शब्द का अर्थ स्वर्ण (सोना), सुन्दर, चन्द्रमा, कर्पूर, पानी, औषधी विसेष आदि है। ओष (ताप दहन) को शांत करनेवाला औपधी कहलाता है और उसका अधिष्ठाता औषधीश नाम चन्द्र को है। संसार ताप शामक कृष्ण और राम है। अतः रामचन्द्र का अर्थ भवताप संहारक राम (भवताप भयाकुल पाहि जनम्) और कृष्ण चन्द्रका अर्थ है भवताप शामक कृष्ण। चन्द्र का कर्पूर अर्थ के प्रकरण में कर्पूर पद से गौर वर्ण (कर्पूर गौरं करुणावतारम्) शोतल ताप शामक स्वभाव, सुगन्ध गुण (अतिशय सौगन्ध्य), निर्मलत्व, आदि घर्म का ग्रहण है। अतः रामचन्द्र का अर्थ है कर्पूर के समान गौर वर्ण वाला सुन्दर राम। राम पद का अर्थ भी सुन्दर और सित (गौर) है "बले रामौ नील चारु सिते त्रिपु अ.को." और चन्द्र पद का भी यही अर्थ हुआ अतः राम और चन्द्र इन दोनों पदों में तुल्य योगिता वा एकार्थता होने के कारण रामचन्द्र शब्द सारगर्भित है। यहाँ "विनापि प्रत्ययं पूर्वोन्तर पदयोर्वा लोपो वक्तव्यः" के अनुसार चन्द्र अथवा रामचन्द्र एवं चन्द्र कहने से भी राम अथवा राम चन्द्र का बोध होता है। इसी प्रकार कृष्ण चन्द्र के प्रकरण में भी चन्द्र पद से सुन्दर गौर कृष्ण का बोध विप्रतीप (उत्क्रमित) विधि से होता है। क्योंकि कृष्ण का साक्षात् अर्थ काला है जो गौर का विरोधी है। परन्तु कृष्ण के वर्ण में काला रंग का कारण है–"या अनुरागी चित्त की गति जानै नहीं कोये। ज्यों ज्यों बहै श्याम रंग, त्यों त्यों उज्जल होये॥" इस विलक्षण विज्ञान के कारण यह कृष्ण गौर का उपादान है। समुद्र देखने में नीला (कृष्ण) मालूम पडता है, परन्तु इसका जल श्वेत रंग का है। समुद्र में श्यामता प्रति भासिक या आभास मात्र है यथार्थ नहीं। यही बात कृष्ण चन्द्र के विषय में भी है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पं. आयुर्वेदानन्द झा ने कहा–रामचन्द्र और कृष्ण चन्द्र के प्रकरण में चन्द्रपद ओषधीश (चन्द्र) का वाचक है, जो वेद मन्त्र से सिद्ध है–"नक्तं जातास्योषधे रामे कृष्णे असिक्नि च । इदं रजनि रजय किलासं पलितं च यत ॥ अथर्व० १।२३।१॥' यहाँ राम और कृष्ण को औषध रूप एवं कुष्ठ रोग नाशक प्रतिपादित किया गया है । अत ओषध रूप राम और कृष्ण के साथ ओषधीश चन्द्र पद की योजना तुल्य योगिता, समव्यापि, समन्वय और 'समान धर्मेण व्यसनेन सख्यम्, सख्य भाव का प्रतिपादक एकार्थक होने से युक्त है । अतः रामचन्द्र का अर्थ है ओषधीश ओषध (राम) और कृष्णचन्द्र का अर्थ है ओषधीश ओषध (कृष्ण) ।

पं. वेदानन्द व्यास ने कहा–चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षो सूर्योऽजायत ॥ऋ. १०।७०।....॥' एवं "सशिसूर्यनेत्रम्–गी.११। के अनुसार चन्द्र ब्रह्म का मन (हृदय) तथा नेत्र (ज्ञान) का स्थान है । अतः रामचन्द्र का अर्थ है हृदय (भावना) एवं नेत्र (ज्ञान) रूप राम और इसी प्रकार कृष्ण चन्द्र का अर्थ है–हृदय और ज्ञान अर्थात भावना और विवेक रूप कृष्ण । यह उनके माधुर्य (भावना) एवं ऐश्वर्य (विवेक) दोनों धर्मों का ज्ञापक है

पं. विनोदी झा ने कहा है–चन्द्र अपनी षोडश कला का ज्ञापक है–"प्रभा जाइ कहाँ भानु विहाई । कहाँ चन्द्रिका चन्द्र तजि जाई ।" षोडश चन्द्रकला–"अमृता मानदा पूषा पुष्टिस्तुष्टी रतिर्धृतिः । शशिनी चन्द्रिका कान्तिर्ज्योत्स्ना श्रीः प्रीति रङ्गदा ॥ पूषणा चाथ पूर्णा स्युः कलाचन्द्रस्य षोडश ॥इति॥' इन्हीं अमृतादि षोडश कला पूर्ण होने से रामचन्द्र तथा कृष्णचन्द्र शब्द प्रसिद्ध हैं यही रामचन्द्र और कृष्णचन्द्र शब्द का अर्थ और तात्पर्य है ।

पं. कोशानन्द पाठक ने कहा–"चन्द्रशाला शिरोगृहम् के अनुसार चन्द्र पद गृह के शिरोभाग सर्वोच्च छत का है । राम और कृष्ण का गृह (धाम) सर्वोच्च धाम क्रमशः साकेत और गो लोक है । अतः सर्वोच्च धाम में सर्व शिखर पर विराजमान होने के कारण उन्हीं रामचन्द्र और कृष्ण चन्द्र कहा जाता है । वेदों

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ने स्पष्ट उस सर्वोच्च धाम के सम्बन्ध में कहा है–"त्रिपाद स्यामृतं दिवि–ऋ. १०।९०।३" तथा "तद्विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः दिवीव चक्षुराततम् ॥ऋ. १।२२।२०।"

पं. उक्कठ ठाकुर ने कहा वेदो में विष्णु सम्बन्धी मन्त्र बहुत थोडे हैं ।

पं. ठीठुर ठाकुर ताल ठोकते हुए मैदान में कूद पडे और कहा–सम्पूर्ण वेद विष्णु सम्बन्धी हैं ।

पं. उक्कठ ठाकुर आश्चर्जित होते हुये बोले कैसे ?

पं. ठीठर ठाकुर ने कहा–सम्पूर्ण वेद यज्ञ से विनियुक्त है और यज्ञ क्रिया के अङ्ग वा विषय हैं । दूसरे शब्दों में सम्पूर्ण वेद यज्ञ मय और यज्ञ रूप हैं । ऐसा मीमांसाशास्त्र भी डंके के चोट से कहती है–"आम्नायस्य क्रियार्थत्वादानर्थक्यमतदर्थानाम्–मी.सू. १।२।१, तदभूतार्थानां क्रियार्थेन समाम्नायः–मी. सू. १।१।२५" सम्पूर्ण वेद यज्ञों का ही प्रतिपादक है । विष्णु का ही अपर नाम यज्ञ है और यज्ञ का ही अपर नाम विष्णु है–"यज्ञो वै विष्णुः कृष्णं यजुर्वेद ३।५।२, शतपथ ब्राह्मण १।१।२।१३ तैत्तिरीय ब्राह्मण १।२।५।४०, ऐतरेय ब्राह्मण १।१५, शाङ्खायन ब्राह्मण ४।२ आदि । तथा–'विष्णुर्वै यज्ञः–ऐतरेय ब्राह्मण १।१५; तैत्तिरीय शाखा ६।२।८।७, मैत्रा०शा०४।६।२, कवि शा० ३५।९ इत्यादि । इस प्रकार अन्वय तथा व्यतिरेक विधियों से यज्ञ और विष्णु में एकत्व सिद्ध तथा प्रतिपादित है । पुनः अन्वय व्यतिरेक विधि से भी दोनों में अपृथकत्व वा अद्वैत प्रतिपादित तथा सिद्ध है–"यो वै विष्णुः स यज्ञ–शतपथ ब्राह्मण ५।२।३।६।" जो बिष्णु है वही यज्ञ है । दोनों में अभेद वा तादात्म्य है । अतः सम्पूर्ण वेद यज्ञ वा विष्णु मय है और विष्णु सम्बन्धी ही हैं ।

पं ठीठुर ठाकुर का ठीक से ठोका ठठाया तर्क सङ्गत वेद वाक्य सुनकर पं. उक्कठ ठाकुर चकराये । उन्हें आजतक यह रहस्य या तत्त्व ज्ञात नहीं था । वे वेदों में विष्णु विषयक बहुत ही अल्प मन्त्रों कोही समझ और मान रहे थे । आज पं. ठीठुर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ठाकुर की वाणी ने उनकी दोनों आखें खोल दी। ज्ञान नेत्रों पर पडा अज्ञानता का कपाट हट गया। परन्तु इसे सीधे स्वीकार कर लेने में उनका पराजय था। अतः आपत्ति करते हुये बोले वेदों में अनेको देवताओं अग्नि, मित्र, वरुण, आदित्य आदि के मन्त्र हैं। फिर सबों को विष्णु का ही मन्त्र कैसे मान लिया जाये ?

पं. ठीठुर ठाकुर ठहाका मारते हुये बोले वेदों में एक ही विष्णु को अग्नि आदि अनेकों नामों से निरुपित किया गया है "सोमं राजानं वरुणमग्नि मन्वारभामहे। आदित्यं विष्णुं सूर्यं ब्राह्माणं च बृहस्पतिम् ॥ऋ. १०।४१।३=साम ९१॥" पुनः सभी नामों को एक ही का वाचक कहा गया है—"इन्द्रं मित्रं वरुणमग्निमाहु रथो दिव्यः स सुपर्णो गरुत्मान्। एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्त्यग्निं यम मातरिश्वानमाहुः ॥ऋ. १।१६।४६॥" तदेवाग्निस्तदादित्य तद्वायु स्तदु चन्द्रमा। तदेव शुक्रं तद्ब्रह्म ता आपः स प्रजापतिः ॥शु.य. ३२।१॥" अतः देवता वाचक अग्नि आदि अनेक नाम होने पर भी उनमें एक विष्णु का ही वाचकत्व है।

वेद वाक्य के समक्ष हठ दलील व्यर्थ तथा हास्यप्रद था। अतः विज्ञ उक्कठ ठाकुर ने इसे स्वीकार कर लिया। इत्यलम्

॥ भगवत्पूजन ॥

महामहोपाध्याय जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्य रघुवराचार्यजी

"संस्मृतः पूजितो वापि यः पुंसां भगवानिह।
तमाराधय गोविन्दं यदीच्छसि परांगतिम् ॥१॥

कर्मभूमि स्वरूप इस मनुष्यलोक में परम पुरुषार्थ ही एक प्रधान फल माना गया हैं। समस्त ऋषियों ने मोक्ष की ही भूरि भूरि प्रशंसा करके प्राणधारियों के जीवन का सच्चा ध्येय इसीको अपने आर्ष ग्रन्थों में निर्णीत किया हैं। इस परम पुरुषार्थ स्वरूप मोक्ष के लिये साधन कोटि में सदाचार का भी परिगणना है। परन्तु प्रधान साधन तो भगवद्भक्ति ही मानी गयी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हैं, इस भक्ति के अनेक भेद हैं। इनमें भी अर्चन भक्ति की महिमा शास्त्रों में प्रधान रूप से वर्णित है। इसी आशय को ऊपर का ऋषि वाक्य व्यक्त कर रहा हैं। अर्थात् जो भगवान् गोविन्द संस्मरण करने से और पूजन करने से मनुष्यों के दुःख मय संसार के नाशक हैं। उन्हीं गोविन्द महाप्रभु का पूजनादि द्वारा आराधन करो यदि परम पद की इच्छा रखते हो तो, इस वाक्य से भगवान् श्रीराम का पूजन परमगति का देनेवाला स्पष्ट रूप से कहा गया हैं। इसी प्रकार भगवत्पूजन रहित मनुष्य की समग्र क्रियायें मुरदे को अलंकार पहिराने के समान व्यर्थ मानी गयी हैं। इसी अभिप्राय को व्यक्त करने वाला विष्णु धर्मोत्तर का वचन है कि–

"विष्णु पूजा विहीनस्य दत्तं चेष्टं हुतं श्रुतम् ।
तपश्च व्यर्थतां याति प्रेतालंकार वै द्विज ॥२॥

इस प्रकार भगवत्पूजन की आवश्यकता शास्त्रों में बहुत बतायी गयी है। भगवान् के पूजन का ऐहिक भी अपरिमित फल है। जैसे विष्णु धर्मोत्तर का ही दूसरा वचन है कि,

"युगकोटि सहस्त्राणि विष्णुमाराध्यपद्मभूः ।
पुनस्त्रैलोक्यधातृत्वं प्राप्तवानिति शुश्रुम ॥३॥
शक्रः क्रतुशतेनेत्थमाराध्य गरुडध्वजम् ।
देवेन्द्रत्वं गतस्तस्मान्नान्य पूज्यतमः क्वचित् ॥४॥

ब्रह्मा हजार युगकोटि तक विष्णु भगवान् का आराधन करके तीन लोक के धातृपद को प्राप्त हुए हैं। इन्द्र ने सौ यज्ञ करके गरुडध्वज भगवान् का पूजन किया, और इससे वह देवेन्द्र पद को प्राप्त हुये अतः अन्य कोई देव पूज्यतम नहीं है। पूजनीय तो शुद्ध सत्व विग्रह भगवान् श्रीरामचन्द्रजी ही हैं। और उनकी पूजा से विमुख मनुष्य को महा अनर्थकारी नरक की प्राप्ती होती है जैसे कि,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

"मातृवत् परिरक्षन्तं सृष्टिसंहारकारणम् ।
योनार्चयति वै विष्णुं सोऽक्षय्यं नरकं व्रजेत् ॥५॥

माता के समान रक्षण करने वाले और सृष्टि संहार के कारण जो भगवान् रामचन्द्रजी वेद प्रतिपाद्य है । उनका जो मनुष्य अर्चन नहीं करता वह अक्षय नरक में जाता है यहाँ पर "कञ्च ध्येयः कारणन्तु ध्येयः" इस श्रुति का अर्थ विवृत किया गया है । तात्पर्य इस प्रकार है । ऋषियोंने एकत्र होकर किसका ध्यान और पूजन करना चाहिये यह विचार आरम्भ किया । अंत में उन्होंने यह निश्चय किया कि "कारणन्तु ध्येयः" कारण स्वरूप का ही ध्यान और यजन करना चाहिये । इस ऊपर के वाक्य में "सृष्टि संहार कारणं विष्णुम" ऐसे सिद्धांत के होनेसे इस जगत् का सर्वावस्थाओं के कारण एक विष्णु भगवान् ही माने गये है अतः उनका ही पूजन और सर्व प्रकार से सेवन करना चाहिये । अन्यत्र शास्त्रों में एक इतिहास इस प्रकार भी है कि "एकबार मार्कण्डेय ऋषि के प्रति रुद्र ने कहा कि हे सुव्रत मार्कण्डेय ? एक मुहूर्त्त तुम ठहरो, मैं तब तक देवों के देव भगवान् श्रीराम जी का आराधन कर लूं । इस बात को सुनकर मार्कण्डेय ऋषि के मनमें बड़ी शंका उत्पन्न हुई कि,

"किमाराध्यः परोदेवस्तवाप्यस्ति जगत्पते ।
त्वमेव सर्वभूतानां पूज्यश्चेति मतिर्मम ॥६॥

अर्थात हे जगत्पते ? क्या कोई दूसरा उत्कृष्ट देव आपका भी आराधनीय है ? मैं तो यही मानता हूं कि समस्त जगत् के पूजनीय एक आप ही है । मार्कण्डेय के इस वचन को सुनकर श्री रुद्र बोले कि,—

"आराध्यो भगवान् विष्णुरेक एव मयाच्युतः ।
आराधय हृषीकेशं यदीच्छसि परांगतिम् ॥७॥

भगवान् अच्युत विष्णु श्रीराम एक ही मेरे आराध्य (पूजनीय) हैं, हे कार्कण्डेय ! यदि तुम परागति चाहते हो तो तुम भी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उन्ही विष्णु स्वरूप भगवान् श्रीरामचंद्रजी का आराधन करो। इस आख्यान से सबके आराध्य एक भगवान श्री रामचंद्रजी ही सिद्ध होते हैं। इतने वक्तव्यसे श्रीरामचंद्रजीका पूजन सर्वोत्कृष्ट पूजन है वह कहा गया। श्रीवैष्णव सम्प्रदायों में पूजन की पद्धति तो अवश्य है। परन्तु आवश्यक रूप से सब वैष्णव कदाचित् नहीं करते। ऐसा नहीं होना चाहिये। प्रत्येक वैष्णव बन्धुओं को भगवत्पूजन नित्य करते रहना चाहिये। क्या विरक्त और क्या गृहस्थ सबको सामान्य रूप से यह कर्तव्य कहा गया हैं। श्री भागवत शास्त्र में इस प्रकार वैष्णवों के लिये हितोपदेश हैं।

"गृहं श्मशानं तव विम्ब वर्जितं,
कथाविहीनाश्च गिरः शिवारूतम्।
श्वसच्छवोदास्यविनाकृतं वपु
र्वदन्ति हि त्वय्यनिवेदितं विषम् ॥८॥

अर्थतः भाव यही है कि जिस घर में आपकी (भगवान् श्रीरामचंद्रजी की) प्रतिमा नहीं हैं। आपका पूजन नहीं होता वह घर श्मशान के तुल्य हैं। भगवत्कथा से विमुख वाणी एक सियार की बोली के समान है, भगवान् के दास हुए बिना मनुष्य श्वास लेता हुआ मुर्दा है और भगवान् को अनिवेदित अन्न विष हैं। इस ऋषि वाक्य के आधार पर हमारे श्रीवैष्णवों की समस्त क्रियाए भगवत सम्बन्धिनी ही होनी चाहिये। भगवान् का पूजन मानसिक और कायिक दोनों प्रकार का शास्त्र में कहा गया है यद्यपि अग्नि, जल, सूर्य, भगवत् प्रतिमा, और हृदय आदि पवित्र स्थानों में भिन्न भिन्न प्रकार से पूजन हो सकता हैं। तथापि सर्व साधारण के लिये मंदिर आदि में प्रतिष्ठापित श्रीरामचंद्र भगवान् की प्रतिमा और शालिग्राम भगवान् का पूजन ही सरल और सुगम हो सकता हैं। अर्चन के प्रकार अधिकारी भेद से भिन्न भिन्न होने पर भी अपनी शक्ति के अनुसार पूजन करने वाले को प्रथम एक निश्चय का लेना चाहिये।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

साधारण प्रकार तो यह है कि प्रातः काल में मृत्तिका और गोमय आदि विशुद्ध द्रव्यों के उपलेपनादि से अपने शरीर को स्नान द्वारा शुद्ध करके दो आचमन करके श्रीराम मंत्र का जप और ध्यान करना चाहिये। तदनन्तर वैदिक पुरुषसूक्त अथवा श्री सूक्त अथवा स्वाधिकारोचित पौराणिक मन्त्रों से भगवान् श्रीरामचन्द्रजी का पूजन करें। इसके बाद प्रदक्षिणा और साष्टांग नमस्कार करें। यह भगवत्पूजन षोडशोपचार अथवा बत्तीश उपचारों में से अपनी शक्तिके अनुसार जो सुगम प्रतीत होते हों उनको ग्रहण करके उसी प्रकार करें। षोडशोपचार अथवा द्वात्रिंशत उपचारों से भगवान् के पूजन की विधि साम्प्रदायिक रहस्य को जानने वाले अपने अपने आचार्यों से जान लेनी चाहिये। किंतु यह देवार्चन भक्तों के लिये नित्य कर्त्तव्य होना चाहिये। कभी किया और कभी नहीं ऐसे स्वेच्छाचार से अधिक लाभ नहीं होता। यदि मन्दिरों में अन्य भगवान् मूर्तियों के पूजन की सुविधा न हो तो केवल शालिग्राम भगवान् को ही पूजन श्रेयस्कर हैं। इसके लिये पद्म पुराण में लिखा है कि

"शालिग्रामशिला यत्र यत्र द्वारावतीशिला।
उभयोः सङ्गमो यत्र तत्र मुक्तिर्न संशयः ॥९॥

अर्थात् जिस स्थान में शालिग्राम भगवान् की शिला और द्वारावती शिला यह दोनों एकत्रित करके पूजी जाती हैं। वहाँ अनायास ही मुक्ति रहती हैं। इसमें कुछ भी संदेह नहीं हैं। शालिग्राम शिला के पूजन में एक सौकर्य यह भी है कि, उनकी प्राण प्रतिष्ठा की आवश्यकता नहीं हैं। क्योंकि शालिग्राम भगवान् नित्य संनिहित रहते हैं। इसी प्रकार शालिग्राम शिला के विषय में स्पृश्यास्पृश्य दोष की भी शंका नहीं रहती। रेलगाडी आदि वाहनों में बैठने पर भी शालिग्राम भगवान् के स्वरूप का अपने पूज्यरूप में स्वीकार कर सकते हैं। इसलिये परम सुगम और सुसाध्य शालिग्राम भगवान् का पूजन है। विशेष जिज्ञासुओं को अपने साम्प्रदायिक आचार्यों से समझ लेना चाहिये।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

॥ श्रीरामार्चन पद्धतिः ॥

तदित्थं मुमुक्षुरुपासको मुहूर्तमात्रावशिष्टायां रात्रौ प्रतिबुध्य निरालसः प्रातः समुत्थाय धौतपाणिपादः प्राङ्मुखः स्थित्वा

"हरिः ॐ सचन्त यदुसस सूर्येण
चित्रामस्य केतवो रामविन्दन् ।
आयन्नक्षत्र दद्दशे दिवोन पुनर्यतो न किरद्धानुवेद ॥
हरिः ॐ अर्वाची सुभगे भव सीते वन्दामहे त्वा
यथा नः सुभगाऽससि यथा न सुफलाऽससि" ॥

इत्यादिकमनुसन्धाय बहिर्निर्गत्य दक्षिणकर्णे यज्ञसूत्रम् संवेष्ट्य उत्तराभिमुखो भूत्वा मूत्रपुरीषोत्सर्जनं कुर्य्यात् । ततोऽतन्द्रितोगन्धलोपकरं शौचं विधाय सप्तकृत्वा सजलामलकमात्रमृत्तिकाभिर्गुदप्रक्षालनं कुर्य्यात् । त्रिसजलमृतिकाभिर्लिङ्गशौचं च ततोदक्षिणवामहस्तौ प्रत्येकं दशकृत्वः सजलं मृत्तिकाभिः प्रक्षाल्य दक्षिणवामपादौ च पञ्चकृत्वः ताभिः प्रक्षाल्य षोडशकृत्वो गण्डूषमाचरेत् । ततोद्विराचम्य शरीरशुद्धये स्नानं प्रोक्षणादिकं वा यथा शक्तिविधाय गुरुपरंपरानुसन्धानपूर्वकतत्तन्मन्त्रानुच्चार्य्यो-दूर्ध्वपुण्ड्रान्धृत्वा पुनः स्वाचार्य्यं ध्यात्वा गुरुपरम्परानुसन्धानपूर्वकं रहस्यत्रयं चानुसन्धाय पश्चात्सन्ध्यावन्दनादिनित्यकर्म तत्प्रयोगविधिना भगवदाज्ञया भगवत्कैङ्कर्यत्वेन च कुर्य्यात् ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ततोदिव्यमङ्गलविग्रहस्य साङ्गसायुधसपरिवारस्य श्री सीतासमेतस्य भगवतो रामभद्रस्य मनसैव एकैकमङ्ग ब्रह्मसृष्टिलोकोत्तरसौन्दर्यलावण्याढ्यं ध्यायन् दिव्यैः षोडशोपचारैरर्चनं विदध्यात् ।

मध्याह्निकानुष्ठानसमयेपि भगवच्चरणारविन्दस्वाचार्य्यचरणारविन्दं च ध्यायन् स्नात्वा भगवद्विभूती भगवच्छरीरभूतान् देवर्षिपितॄन् ध्यात्वा संतर्प्य च धौतवस्त्रादिकं परिधायाचम्य पूर्ववदेवोर्ध्वपुण्डादिकं विधायैवमेव भगवदाराधनत्वेनैव मध्याह्निकानुष्ठानमपि कुर्य्यात् ।

अथैवमर्चनयोग्यो मुमुक्षुरुपासको भगवन्मन्दिरं प्रविश्य

श्रीरामं जनकात्मजामनिलजं वेधोवशिष्टावृषी
योगीशञ्च पराशरं श्रुतिविदं व्यासंजिताक्षंशुकम्
श्रीमन्तं पुरुषोत्तमं गुणनिधिं गङ्गाधराद्यान् यतीन्
श्रीमद्राघवदेशिकञ्चवरदं स्वाचार्यवर्यं श्रये ।

इत्यादि श्रीगुरुपरम्परादिकमनुसन्दधत्साष्टाङ्गत्वेन दण्डवद्भगवन्तं प्रणम्य अर्चनपात्रादीनि संभृज्य शुद्धजलेन संप्रक्षाल्य समर्चनीयदेवस्य दक्षिणपार्श्वेसमुपविश्य पूर्वदिन समर्पितगन्धमाल्यतुलसीदलादिकमपनीयपीठोपरिसन्निवेश्य आग्नेयारभ्यप्रदक्षिणक्रमेण अर्घ्यपाद्याचमनस्नानपात्राणि संस्थाप्य तेषां मध्ये शुद्धजलपात्रं निधाय,

तत्रार्घ्यपात्रे सिद्धार्थाक्षतकुशाग्रतिलयवगन्धफलपुष्प सहितजलं निक्षिपेत् ।१। दूर्वाविष्णुपर्णीपद्मश्यामाकसहितं जलं पाद्यपात्रे निक्षिपेत् ।२। एलालवङ्गकङ्कोलजातिसहितं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जलमाचमनपात्रे निक्षिपेत् ।३। कोष्टमाजिष्ठहरिद्रामुस्ताशै-लेयचम्पकवचाकर्पूरलामज्जकसहितं जलं स्नानपात्रे निक्षिपेत् ।४।

तदेतदभावे तु तद्वाक्योच्चारणपूर्वकं तुलसीदलमेव तत्तत्तोयपात्रे निक्षिपेत् । श्रीमन्त्रराजेन प्रत्येकं तत्तत्पात्र संमन्त्र्य सुरभिमुद्रां च प्रदर्श्य वामपार्श्वे पूर्णकुम्भं निधाय अन्यानि पूजाद्रव्याणि दक्षिणपार्श्वे च निधाय मनसा स्वाचार्य्यमर्घ्यादिभिः संपूज्य तद्धस्तेनैवाराधनं स्वीकार्य्यमिति भगवते विज्ञाप्य प्राणायामत्रयं च कृत्वा भगवद्दुत्थ प ाय भगवन्तं प्रार्थयेत्—

कौशल्या सुप्रजा राम ! पूर्वा सन्ध्या प्रवर्तते ।
उत्तिष्ठ नरशार्दूल ! कर्त्तव्यं दैवमाह्निकम् ॥१॥
उत्तिष्ठोत्तिष्ठ भद्रं ते त्यज निद्रां जगत्पते !
त्वदीयोत्थानमात्रेण उत्थितं भुवनयत्रम् ॥२॥
उत्तिष्ठोत्तिष्ठ श्रीराम ! भद्रं ते करुणानिधे !
उत्तिष्ठ जानकीकान्त ! त्रैलोक्यं मङ्गलं करु ॥३॥
अप्रमेयकृपासिन्धुस्वरूपे ! रामसुप्रिये !
सुप्रभातानिशा सीते ! श्रीरामाभिमुखीभव ॥४॥

श्रीभगवद्रामचन्द्रामभिमतानुरूपगुणविभवैश्वर्यशीला-द्यनवधिकाति सयासंख्येयकल्याणगुणगणां पद्मवनालयां पद्मा ननां पद्मदलायताक्षीं नित्यानपायिनीं भगवतीं निरवद्यां श्रीसीतां श्रीरामदिव्यमहिषीमखिलजगन्मातरमशरण्यामनन्य शरणः शरणमहं प्रपद्ये ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्वशेषभूतेन मया स्वीयैः सर्वपरिच्छदैः ।
विधातुं प्रीतमात्मानं देवः प्रक्रमते स्वयम् ।

इतिश्लोकञ्चानुसन्धाय पञ्चोपनिषन्न्यासंकुर्य्यात् ।
ॐ षां नमः पराय परमेष्ठ्यात्मने नमः इति शिरसि ॥१॥
ॐ यां नमः पराय पुरुषात्मने नमः इति नासाग्रे ॥२॥
ॐ रां नमः पराय विश्वात्मने नमः इति हृदये ॥३॥
ॐ वां नमः पराय निवृत्यात्मने नमः इति गुह्यप्रदेशे ॥४॥
ॐ लां नमः पराय सर्वात्मने नमः इति पादयोः ॥५॥

एवं पञ्चोपनिषन्न्यासं विधाय, श्रीमन्त्रराजन्यासं कुर्य्यात् । ॐ रां ज्ञानाय हृदयाय नमः । ॐ नमः ऐश्वर्य्याय शिरसे स्वाहा । ॐ रामाय शक्त्यै नमः शिखायैवषट् । ॐ बलाय कवचाय हुम् । ॐ तेजसे नेत्राभ्यां वौषट् । ॐ रामाय वीर्यायास्त्राय फट् ।

इति मंत्रराजन्यासमनुष्ठाय पूर्वस्थापितस्ववामपार्श्वस्थपुर्णकुम्भे श्रीराममन्त्रोच्चारपूर्वकं तुलसीदलं निक्षिप्य श्रीमंत्रराजेनैवामिमंत्र्य तज्जलेनार्घ्यादिपञ्चपात्राणि क्रमेण षडक्षर मन्त्रोच्चारणपूर्वकं प्रपूर्य्य उद्धरण्यार्घ्यादिपञ्चपात्रेभ्यः किञ्चित्किञ्चित्तोयं समुद्धृत्य पूर्णकुम्भे निक्षिपेत् । तत उद्धरण्यार्घ्यसलिलमादाय नासाग्रपर्यन्तमुधृत्य ॐ विरजे आगच्छागच्छेति सप्तकृत्वा उक्त्वा तत्तोयेनात्मानं पूजोपकरणानि यागभूमिं च प्रोक्ष्यावशिष्टमन्यत्र प्रक्षिपेत् । ततस्तुलसीदलमादाय हरिः ॐ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

साकेतं दिव्यलोकं सुरतरुमतुलं तत्र रत्नालिगर्भं
हैमं सिंहासनं तच्छुभरुचिनिलयं भानुकोटिप्रकाशम् ।
पद्मं चानेकपत्रं कपिनिकरपतिं पादुके बातजातं
सुग्रीवान् द्वारपालान् नलगवयमुखान् रामभक्तान्प्रपद्ये ॥१॥
वामं पादं प्रसार्य्याश्रितकलुषहरं दक्षिणं कुञ्चयित्वा
जानुन्याधाय दिव्ये रिपुकुलदमने बाणचापे दधत्सः
रामः पाणिद्वयेन प्रतिभटभयदः पद्मगर्भारुणाक्षो
देवीभूपादिजुष्टो वितरतु जगतां शर्म साकेतनाथः ॥२॥

इतिपद्यैरित्थमनुसन्धाय श्रीसीतासमेतभगवच्छ्रीरामचन्द्रचरणारविन्देतत्प्रक्षिपेत् ।

अथैवमासनंकल्पयित्वा ओमाधारशक्त्यै नमः इति आधारशक्त्यै अर्घ्यादीनि सर्मपयामि । ॐ प्रकृत्यै नमः इति प्रकृत्यै अर्घ्यादीनि समर्पयामि । ॐ अखिलजगदाधाराय कूर्मरूपिणे नारायणाय नमः इति तस्मै अ० । ॐ भगवतेऽनन्ताय नागराजाय नमः इति तस्मै अ० । ॐभूम्यै नमः इति तस्यै अ० । ॐश्रीसाकेतायदिव्यनगराय नमः इति तस्मै अ० । ॐ पुष्पकाय दिव्यविमानाय नमः इति तस्मै अ० । ॐ श्रीसाकेतायदिव्यजनपदाय नमः अ० । ॐ आनन्दमयाय दिव्यरत्नमण्डपाय नमः अ० । ॐ आस्तरणभूताय अनन्ताय नमः अ० ।

आग्नेयां दिशि—ॐ धर्माय पीठपादाय नमः अ० । नैऋत्याम् ॐ ज्ञानाय पीठपादाय नमः अ० । वायव्याम्

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ॐ वैराग्याय पीठपादाय नमः अ० । ऐशान्याम्—ॐ ऐश्वर्य्याय पीठपादाय नमः अ० । ॐ पीठभूताय अनन्ताय नागराजाय नमः अ० । प्राच्याम् ॐ अधर्माय पीठगात्राय नमः अ० । दक्षिणस्याम् ॐ अज्ञानायपीठगात्राय नमः अ० । पश्चिमायाम्— ॐ अवैराग्यायपीठगात्राय नमः अ० । उत्तरस्याम् ॐ अनैश्वर्याय पीठ गात्राय नमः अ० । एभिः परिच्छिन्नतत्त्वसदसदात्मकाय नमः अ० । ॐ ऋग्वेदाय पीठवाहक य नमः अ० । ॐ यजुर्वेदाय पीठवाहकाय नमः अ० । ॐ सामवेदाय पीठवाहकाय नमः अ० । ॐ अथर्वणवेदाय पीठवाहकाय नमः अ० । इत्थं गन्धपुष्पादिभिस्तानभ्यर्च्य प्रणमेत् । अथ पीठवाहकोपरि— ॐ परिच्छिन्नतनवे पीठभूताय शुद्धात्मकायाऽनन्ताय नागराजाय नमः इति तस्मै अ० । तत्रानन्तोपरि ॐ अष्टदलपद्माय नमः इति तस्मै अ० तद्दलेषु ॐ सं सूर्य्याय नमः अ० । केशरेषु ॐ सं सोममण्डलाय नमः अ० । कर्णिकायाम् ॐ रं वह्निमण्डलाय नमः अ० । इति मण्डलत्रयं ध्यात्वा पद्मस्य पूर्वपार्श्वदले ॐ विमलायै चामरहस्तायै नमः इति तस्यै अ० । पद्मस्याग्निकोणे ॐ उत्कर्षिण्यैचामरहस्तायै नमः इति तस्यै अ० । पद्मस्य दक्षिणदले ॐ ज्ञानरूपायै चामरहस्तायै नमः अ० । पद्मस्य नैऋत्यदले ॐ क्रियायै चामरहस्तायै नमः अ० । पद्मस्य पश्चिमदले ॐ योगायै चामरहस्तायै नमः

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अ० । पद्मस्य वायव्यदले ॐ सत्यायै चामरहस्तायै नमः अ० । पद्मस्योत्तरदले ॐ प्रह्वयै चामरहस्तायै नमः अ० । पद्मस्येशानदले ॐ ऐशानायै चामरहस्तायै नमः अ० ।

भगवतोऽग्रे कर्णिकायाः पूर्वभागे ॐ अनुग्रहायै नमः अ० । पद्मस्य कर्णिकायाम् ॐ जगत्प्रकृतये दिव्ययोगपीठवाहकाय नमः अ० । दिव्ययोगपीठवाहकोपरि ॐ दिव्य योगपीठाय नमः अ० । योगपीठे ॐ दिव्ययोगपर्यङ्काय नमः अ० । पर्यङ्कोपरि ॐ सहस्रफणाशोभिताय नागराजाय नमः अ० । पुरो ॐ भगवत्पादपीठाय नमः अ० । तदुपरि ॐ भगवत्पादुकाभ्यां नमः अ० ।

अथ तादृशाष्टादलपद्मस्थपर्यङ्कस्थितानन्तोपरि—

प्रपन्नाभीष्टसंदोह श्रीराम ! करुणानिधे ! ।
शिवशेषाद्यविज्ञेयाशेषमाहात्म्य राघव ! ॥१॥
तादृश्या सीतयाऽऽगच्छ पार्षदेन सह प्रभो !
आज्ञां क्रियस्व दासस्य प्रपन्नस्यार्चनाय मे ॥२॥

इति श्रीसीतासहितमप्रमेयकृपारत्नाकरं भगवन्तं साङ्गं सायुधं सपरिवारं सवाहनं स्वशक्तियुक्तं श्रीरामचन्द्रमावाह्य पुष्पाञ्जलिं च तस्मै प्रदाय पूर्वस्थापितार्घ्यपात्रादुद्धरण्यार्घ्यजलमादाय ॐ श्रीसीतासमेतायाप्रमेयकृपारत्नाकराय भगवते श्रीरामचन्द्राय नमः । मध्ये रां रामाय नमः । वामे श्रीसीतायै नमः । इति तत्तन्मन्त्रैः पृथक् पृथग्वा अर्घ्यं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

समर्पयामीत्युक्त्वा भगवतो दक्षिणहस्तं प्रोक्षन्निवविभाव्य तज्जलं पतनपात्रे प्रक्षिपेत् ।

तत उद्धरणीं शुद्धजलपात्रजलेन संप्रक्षाल्य ततस्तथा पाद्यजलपात्रात् पाद्यजलमादाय तदेव वाक्यं समुच्चार्य्य पाद्यं समर्पयामीति वदन् भगवतः पादौ प्रक्षाल्येव विभाव्य तज्जलं पतनपात्रे द्विः प्रक्षिपेत् । शुद्धजलपात्रस्थजलेनोद्धरणीं प्रक्षाल्य आचमनपात्रात्तज्जलमादाय तदेव वाक्यं समुच्चार्य आचमनं तस्मै समर्पयामीति वदन् भगवतो मुखकमलसमीपे प्रदर्श्यतज्जलं पतनपात्रे त्रिः प्रक्षिपेत् ।

उद्धरणीं पूर्ववदेव प्रक्षाल्य शुभ्रवस्त्रेण हस्तकमलमुखकमले समृज्य, शाटिकोत्तराग्रेण पादौ च प्रत्येकं संमृज्य, षोडशोपचारान् समर्पयामीति पुष्पाञ्जलिं प्रदाय उद्धरण्या पूर्णकुम्भात्सलिलमुधृत्य क्षीरफलगुडपूर्णंध्यात्वा तदेव वाक्यं समुच्चार्यमधुपर्कं समर्पयामिति वदन् निवेद्य पतनपात्रे प्रक्षिप्य, पूर्ववदुद्धरणीं प्रक्षाल्य पूर्ववदेवाचमनं प्रदाय शाटया पूर्ववत्समृज्य स्नानार्थं पादुके समर्पयामीति पुष्पाञ्जलिं भगवते प्रदाय, पूर्ववदेव चार्घ्याद्युपचारान् प्रदाय स्नानशाटीं मनसा ध्यात्वा तुलसीकाष्ठेन तद्वाक्योच्चारणपूर्वकं दन्तधावनमाचरन्निव विभाव्य स्वहस्तं प्रक्षाल्य शुद्धजलपात्रतोयेन मन्त्रोच्चारणपूर्वकं गण्डूषं समर्पयामीति तज्जलं षट्कृत्वः पतनपात्रे प्रक्षिप्य पुनरपि तज्जलेन मुखशोधनं समर्पयामीति मुखाम्बुजशोधनमाचरन्निव विभाव्य तज्जलं पतनपात्रे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रक्षिप्य पूर्ववत्पाद्याचमने प्रदाय ताम्बूलं च प्रदाय अभ्यङ्गोद्वर्तनचूर्णं प्रदाय अभ्यङ्गस्नानमाचरन्निव विभाव्य स्नानपात्रं मूर्ध्नि निधाय स्नानीयपात्रजलेन पुरुषसूक्तादिकमनुसंदधत् भगवन्तं स्नापयित्वा स्नानशाट्या समृज्य सिंहासने स्थापयित्वा तद्वाक्येनैव गन्धपुष्पधूपदीपादिके समर्पयामीति वदन् गन्धादिकं भगवते समर्पयेत् ।

ततः पात्रावशिष्टजलेन श्रीं श्रियै नमः लीं लीलायै नमः भूं भूम्यै नम इति मन्त्रोच्चारणेनार्घ्यादिकं प्रदाय ततः ॐ किरीटाय मुकुटाधिपतये नमः अ० । ॐ दक्षिणकुण्डलाय मकरात्मने नमः अ० । ॐ वामकुण्डलाय मकरात्मने नमः अ० । ॐ वैजयन्तीमालायै श्रीतुलस्यै नमः अ० । ॐ श्रीवत्साय श्रीनिवासाय नमः अ० । ॐ कौस्तुभाय रत्नाधिपतये नमः अ० । ॐ काञ्चीगुणोज्ज्वलाय दिव्यपीताम्बराय नमः अ० । ॐ सर्वेभ्योभगवद्दिव्यविभूषणेभ्यो नयः अ० । इति भगवद्भूषणानि अर्घ्यादिभिरभ्यर्चेत् ।

ततोऽर्घ्याद्यैकैकपात्रस्थजलेन क्रमशः ॐ शार्ङ्गायसबाणाय चापाधिपतये नमः अर्घ्यादिनिसमर्पयामि । ॐ सुदर्शनाय हेतिराजाय नमः अ० । ॐ पाञ्चजन्याय शङ्खाधिपतये नमः अ० । ॐ कौमोदक्यै गदाधिपतये नमः अ० । ॐ नन्दकाय खड्गाधिपतये नमः अ० । इति भगवतोदिव्यायुधानि अर्घ्यादिभिरभ्यर्चेत् ।

ततस्तथैव ॐ लं लक्ष्मणाय नमः अ० । ॐ भं भरताय नमः अ० । ॐ शं शत्रुघ्नाय नमः अ० । ॐ हुं हनुमते नमः

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अ० । ॐ सुं सुग्रीवाय नमः अ० । ॐ वं विभीषणाय नमः अ० । ॐ जं जाम्बवते नमः अ० । ॐ नं नलाय नमः अ०। ॐ नीं नीलाय नमः अ० । ॐ गं गवाक्षाय नमः अ० । ॐ गं गवाय नमः अ० । ॐ कं केसरिणे नमः अ० । ॐ सर्वेभ्योभगवत्परिजनपरिचरप्रभृतिभ्यो नमः अ० । इति-भगवत्परिजनानर्घ्यादिभिरभ्यर्चेत् ।

ततस्तथैव भगवतः पूर्वे ॐ ऋक्षराजाय नम० अ० । ॐ नीलाय नमः अ० । दक्षिणे ॐ सुग्रीवाय नमः अ० । ॐ नलाय नमः अ० । पश्चिमे ॐ शत्रुघ्नाय नमः अ० । ॐ अंगदाय नमः अ० । उत्तरे ॐ भरताय नमः अ० । ॐ विभीषणाय नमः अ०। भगवतोऽग्रे ॐ आञ्जनेयाय महाबलाय हुं हनुमते नमः अ०। भगतः पृष्ठे ॐ लक्ष्मणाय नमः अ० । ॐ सर्वेभ्यो भगवद्द्वारपालेभ्यो नमः अ० । इति भगवतो द्वारपालानर्घ्यादिभिरभ्यर्चेत् ।

ततस्तथैव ॐ विघ्नेशाय नमः अ० । ॐ वाण्यै नमः अ० । ॐ दुर्गायै नमः अ० । ॐ क्षेत्रपालाय नमः अ० । ॐ सूर्याय नमः अ०। ॐ चन्द्राय नमः अ०। ॐ नारायणाय नमः अ० । ॐ नारसिंहाय नमः अ०। ॐ वासुदेवाय नमः अ० । ॐ वाराहाय नमः अ० । इत्यङ्गदेवान् सम्पूज्य ॐ श्रीसीतायै नमः अ० । ॐ श्रीलक्ष्मणाय नमः अ० । ॐ श्रीहनुमते नमः अ० । ॐ श्रीभरताय नमः अ० । ॐ श्री शत्रुघ्नाय नमः अ० । ॐ श्रीविभीषणाय नमः अ० । ॐ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीसुग्रीवाय नमः अ० । ॐ श्रीअङ्गदाय नमः अ० । ॐ श्री जाम्बवते नमः अ० । ॐ श्रीप्रणवाय नमः अ० । इत्यङ्ग मन्त्रान् प्रपूजयेत् ।

ॐ सर्वेभ्यो भगवद्गणाधिपेभ्यो नमः अ० । ॐ सर्वेभ्यो भगवत्पार्षदेभ्यो नमः अ० । ॐ सर्वेभ्यो भगवत्परिजनपरिचरेभ्यो नमः अ० । ॐ नित्यै नमः अ० । ॐ मुक्त्यैनमः अ० । ॐ साङ्गसायुधसपरिवारसहीपीकाय दिव्यमङ्गलमूर्त्तये नमः अ० । अथेत्थं पूर्वोक्तैः सह भगवन्तंश्रीराममभ्यर्च्य अञ्जलिना पुष्पाण्यादायः

सुरासुरेन्द्रादिमनोमधुव्रतैर्निषेव्यमाणाङ्घ्रिसरोरुह प्रभो ।।
असंख्यकल्याणगुणामृतोदधे सुरेश रामाद्भूतवीर्यमापते ।१।
अपारसंसारमहार्णवप्लवं पदाम्बुजं ते प्रणतार्तिनाशनम् ।
निषेव्यमाणं सगणैः शिवादिभिर्गतोऽस्म्यहं ते शरणं शरण्यम् २
विकचपद्मदलायतलोचनां प्रणतकामदुघाङ्घ्रिसरोरुहाम् ।
अशरणःशरणांजनकात्मजे प्रतिदिन भवतीमनुचिन्तये ।।३।।
श्रीरामकैङ्कर्यपरायणम्मुहुर्मुहुश्च सीतेशनिदेशकारिणम् ।
तमेकवीरं शरदिन्दुकीर्तिं नमाम्यहं लक्ष्मणमप्रमेयम् ।।४।।
मणीन्दुगर्भं मुकुटाधिनाथं श्रीमत्किरीटं मणिकुण्डले च ।
श्रीकौस्तुभादीनि च दिव्यभूषणान्येतानि नित्यं प्रणमामि विष्णो
महाबलं वायुसुतं महामतिं प्रतप्तचामीकरचारुलोचनम् ।
श्रीरामपादाब्जनिविष्टमानसं द्विडन्तकं श्रीहनुमन्तमीडे ।।६।।

प्रत्यूहव्यूहभङ्गविदधदुरुबलश्शक्तिमान् सर्वकारी
भूरिश्रेयः प्रतापो मुनिवरनिकरैः स्तूयमानोविमानः ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रक्षोदैत्यादिनाशीक्षुभितजलनिधिर्लोकजिल्लोकमान्यो
धन्योनोमङ्गलौघं सपदि सुकुरुतादाममशस्त्रास्त्रसङ्घः ॥७॥
सुग्रीवमुख्यान्परितोजनान्विभोः सद्वारपालान्नलनीलमुख्यान्
गणाधिपान्देववरस्यविष्णोर्नमाम्यहं नित्यमशेषपार्षदान् ।८।
हरिः ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्तदेवास्तानिधर्माणि प्रथमान्यासन्
तेह नाकम्महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याःसन्ति देवाः ९
जगत्पते ? श्रीश ? जगन्निवास ? प्रभो जगत्कारण रामचन्द्र ?
नमो नमः कारुणिकाय तुभ्यं पादाब्जयुग्मे तव भक्तिरस्तु १०
भनोमिलिन्दस्तव पादपङ्कजे रमार्चिते संरमतां भवे भवे ।
यशः श्रुतौ ते मम कर्णयुग्मकं त्वद्भक्तसङ्गोऽतुसदा मम प्रभो
इत्यभिष्टूवन् पुष्पाञ्जलिं सर्वेश्वरश्रीरामचन्द्रपदारविन्दे
समर्प्य ।

उरःशिरोदृष्टिमनोवचःपदद्वयप्रराजत्करयुग्मजानुभिः ।
अङ्गैःक्षितौ तं प्रणमेदथाष्टभिर्दीर्घं तथैतैः कृतधीश्चदण्डवत्
इति साष्टाङ्गप्रणामंकुर्यात् ।

अथ महानैद्यसमये पात्राणि प्रक्षाल्य पूर्ववत्पूर्णकुम्भजलेन पात्राणि पूरयित्वा भोज्याशनार्थं पादुके प्रसार्यार्घ्यादिभिरभ्यर्च्य मधुपर्कं च प्रदाय भगवतः श्रीरामचन्द्रस्य पुरस्ताच्छुचिप्रदेशे यथाशक्तिसंपादितचतुर्विधभोज्यादीन्युपहृत्य—

दोषाकरं नीचमथाल्पशक्तिं चैतन्यहीनं त्वशुचिं त्वनर्हम् ।
त्वद्भृत्यकर्मण्यपराधभाजनम्परं दुरात्मानमितीत्थमेव ॥१॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सुचिन्तयन्मामपि मत्समर्पितमशेषपापापहनामधेय ! ।
उपेक्षितुं त्वच्चरणावलम्बिनं न चार्हसि त्वं जगदीशराघव ! २
कौशल्याजनकात्मजावरगुणश्रीलक्ष्मणैरर्पितं
पंपायां शबरीसमर्पितमहोदिव्याद्भुतस्वादकम् ।
भारद्वाजसमर्पितं च सरसं क्षीरं व्रजे यत्स्वयं
तद्धैयङ्गवमर्जितं सहघृतं यद्यज्ञपत्न्यर्पितम् ॥३॥
अन्यैर्मुक्तजनैः कुचैलविदुराद्यैरर्पितं त्वत्प्रियम्
पथ्यं पाकविशेषसंयुतमथो दृष्टिप्रियं राघव ! ॥
रुच्यं दोषविवर्जितं सह यथाऽसेषः प्रभो ! भोक्तृभिः
स्वीकर्तुश्च तथार्हसि त्वमधुना भक्त्यार्पितं ते मया ॥४॥

हरिः ॐ नाभ्याऽआसीदन्तरिक्षगुंशीर्णो द्यौः समवर्तत । पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथालोकांऽअकल्पयन् ।५।

इतिविज्ञाप्यार्घ्यजलेन प्रोक्ष्य श्रीमन्त्रराजेनाभिमन्त्र्य सुरभिमुद्रां प्रदर्श्य श्रीरामं जनकात्मजामनिलजमित्यादिगुरुपरम्परामनुसन्धाय निवेदयेत् ।

ततो जलपानहस्तशोधनगण्डूषपाद्याचमनादिभिरभ्यर्च्य-
शृणोमि सीतापतिचित्रसत्कथां वदामि सीतापतिकीर्तिमक्षयाम्
स्मरामि सीतापतिदिव्यविग्रहं वृणोमि सीतापतिभक्तिमुत्तमाम् ।
व्रजामि सीतापतिदिव्यमन्दिरं तथा च सीतापतिसत्प्रपन्नताम् ।
युनज्मि सीतापतिचिन्तने मनस्तनोमि सीतापतिदाससङ्गतिम्
अवैमि सीतापतिमञ्जुबन्धुतां तथा च सीतापतिदिष्टभोग्यताम्
ततश्च सीतापतिनित्यधामदां करोमि सीतापतिभक्तिमुत्तमाम्
करोमि सीतापतिपाददासतां नमामि सीतापतिपादपङ्कजम् ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पठामि सीतापतिकाव्यसंहतिं जपामि सीतापतिमन्त्रभूपतिम् ।
करोमि सीतापतिविग्रहार्चनं तथा च सीतापतिमूर्तिदर्शनम् ।
गुणाब्धिसीतापतिनामकीर्तनं परेशसीतापतिपादवन्दनम् ।५।
भजामि सीतापतिमेव केवलं रटामि सीतापतिमेव केवलम् ।
श्रयामि सीतापतिमेव केवलं प्रयामि सीतापतिमेव केवलम् ।६।

इत्याद्यनन्यतावेदनस्तोत्रपुरुषसूक्तादिकं पठन् प्रदक्षिणनमस्कारादिभिः संपूज्य भगवन्तं श्रीसीतासमेतं श्रीरामचन्द्रं पर्यङ्के निवेद्य–

पर्यङ्कासनमारुह्य सीतया सहितः प्रभो ! ।
निद्रां कुरुष्व भगवन् पार्षदैरभिरक्षितः ।।१।।

इति प्रार्थयन् निम्नाष्टकं गायन् शाययेत्–

माता गीत्वा स्वपुत्रं यदि शयनगतं संविधत्तेऽथ शेषिन् ?
शेषत्वात्सात्म्यतत्वं गतवत इह मे कोशलाधीशजायाः ।
वात्सल्यातुल्यपात्रं स्वपिहि गुणगणोदारगीतेन गीतो
देहे सौधेऽतिशुद्धे भजनकलनतः स्वान्तदोलाऽधिशायी ।।१।
कौशल्या कीर्तिधन्या यदुदरजनिमागाज्जगद्यत्तनुः स
श्रीरामो रावणास्याऽप्युपनवशिरसां कर्तितैकेषुणा द्राक् ।
जामाताऽन्वर्थनाम्नो नृपतिकुलमणेर्यो विदेहस्य कुर्यात्
स्वापं दोलां श्रितो हृन् मम दशरथसूर्भक्तिगङ्गाम्बुधौतम् ।।
नीलाभो नीलपद्मोद्भवकृतजगतीनाथ ! सीताधिनाथः
सद्भिर्भोग्योऽपि भोग्यं ननु निखिलमिदं यस्य लीलाधृताङ्गः
धन्वोन्मुक्तेषुणाऽब्जच्छदमिव सितवांस्ताटकोरः परेशो
भक्तिक्षीराब्धिशेषं सदपि मम मनो दोलिकां सोऽधिशेताम्

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

राज्यं दत्त्वाऽनुजायाऽतिविपुलविलसच्छ्रीसमिद्धं निरीहो
वक्षस्वीवीरलक्ष्मी वसतिरनुपमोदारकीर्तिर्निरर्तिः ।
अव्राजील्लक्ष्मणेनाऽतिगहनविपिनं भक्तिभाजाऽनुजेना
ऽऽशेतां दोलां वरेण्यो मम हृदयकृतां सज्जनानां शरण्यः ॥
साकेतेशो विमातुर्वचनकरवरो ज्ञानिनामग्रभूमिः
पौरैः पित्रैस्तधान्यैरनुगमनकरैर्दण्डकां साकमाप्तः ।
शेषाणां तन्मुनिनां परमहितकृते दिव्यभैषज्यतुल्यो
दोलायां स्वापमेयाद्रघुकुलतिलकोमानसे मे स रामः ॥५॥
सुग्रीवायाऽधिराज्यं ददद्भिनवक्राऽब्दच्छविर्वालिकालः
पारावारेऽप्यपारे गिरिवरनिकरैर्बद्धसेतुर्विभुर्यः ।
प्राकारैः प्रावृतां तां दशमुखनगरी ध्वंसिता ध्यानगम्यो
दोलां चेतोऽधिशेतां मम सकलकलोध्वन्विनां ग्रामणीः सः ॥
लोकाक्ष्या सेचनाढ्यातुलबलवपुषा राजमानोविमानः
प्रोन्मीलन्नीलपङ्केरुहवदनघनश्यामधामाभिरामः ।
कोदण्डेनेषुणा चोल्लसितकरकजः श्रीविशालःसुमाल-
ङ्चित्ते स्वापं ममेयादहितविहतिकृद्दोलिकायां स रामः ॥७॥
वीराणामग्रणीर्यः सुरदनुजनृणां जन्मिनां वेतरेषां
कर्त्तापाताऽथहर्त्ता समविरुदयुतो हेयहीनोऽप्यहीनः ।
स्तुत्यो नम्यश्चगम्यश्चिदचिदुभयव्यापिवर्ष्मानिरुष्मा
रामः स्वापं म एयादसितमणितनुर्दोलिकायां स चित्ते ॥

ततो निवेदितनैवेद्यं मनसा चतुर्भागं परिकल्प्य श्रीहनुमदङ्गदसुग्रीवविभीषणादिभ्यो निवेद्यानन्तरं पूर्वाचार्यादिभ्यः स्वाचार्येभ्यश्च निवेद्य शेषं भागवतैः सह भुञ्जीत ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रामानन्देापदिष्टेयं श्रीरामार्चनपद्धतिः ।
मुमुक्षूणां मुदे भूयाच्छ्रीरामप्रीतिकारिणी ॥१॥
अर्चको यः समभ्यर्चेदास्थायेमामहर्दिवम् ।
प्रासाद्य सगणं रामं लभते गतिमुत्तमाम् ॥२॥
इत्यानन्दभाष्यकार जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्य प्रणीत
श्रीवैष्णवमताब्जभास्कर परिशिष्ट श्रीरामार्चनपद्धतिः ।

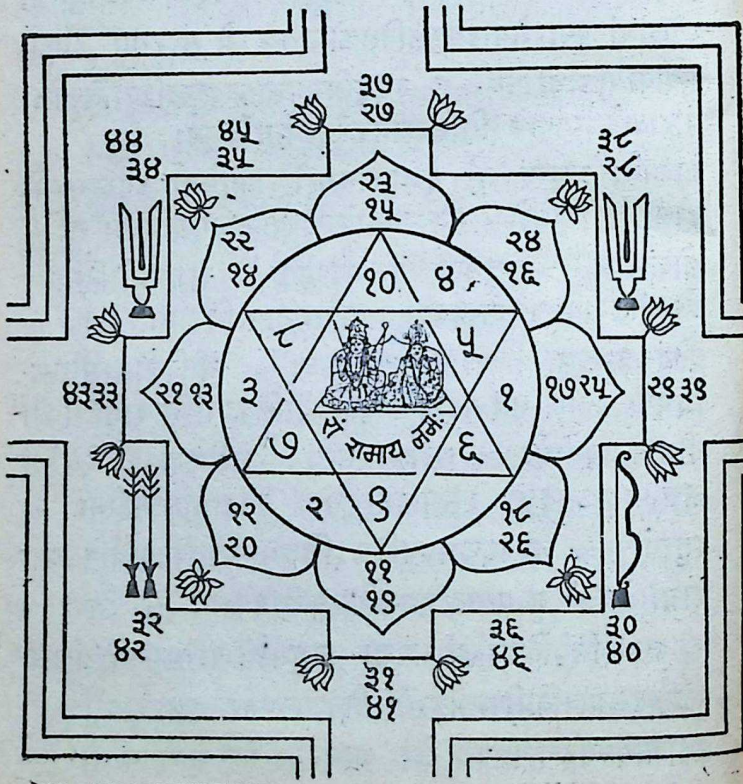

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

५ अथाचिदर्थनिरूपणम् ५

अथ क्रमप्राप्तमचित्तत्त्वमभिधीयते–

अचिन्नाम ज्ञानविरहितं तत्त्वम् । तच्चावस्थान्तरापत्तिरूपविकाराश्ररूपमत एव द्रव्यम् । तद्द्विविधम् जडाजडभेदात । तत्र परप्रकाश्यं जडम् । तद्भिन्नमजडम् ।१।

सर्वेश्वर श्रीरामजी का उपभोगार्ह चित् तत्त्व जीवात्मा के निरूपणानन्तर क्रम प्राप्त अचित् तत्त्व प्रकृति तत्त्व का निरूपण किया जाता है । अचित् तत्त्व उसे कहते हैं जो ज्ञान रहित द्रव्य तत्व हो । वह अचित् तत्त्व अवस्थान्तरित होता है यानी कार्य कलापानुसार समय समय पर घटता बढता रहता है अर्थात् उत्पत्ति स्थिति वृद्धि विपरिणति अपचय एवं नाश रूप छ प्रकार के कार्य कलापों वाला तथा विकार का आश्रय वाला हैं यानी "स्वरूपे च स्वभावे च विकारः प्रकृतेः खलु" इस जगद्गुरु श्रीद्वारानन्दाचार्यजी प्रणीत परिणाम विमर्श के निर्देसानुसार स्वरूप एवं स्वभाव दोनो में विकार होने वाला तत्त्व है इसलिये यह अचित् तत्त्व द्रव्य कहलाता है । वह अचित् तत्त्व जड तथा अजड के भेद से दो प्रकार का है । जड एवं अजड में से जो पर प्रकाश्य दूसरे से प्रकाशित होता है वहा जड द्रव्य है एवं जो तद् भिन्न स्वयं प्रकाशित होता है वह अजड द्रव्य है जैसे दिव्य धाम श्रीसाकेत आदि ।।१।।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अजडं द्विविधं पराक् प्रत्यक् भेदात् । तत्र स्वयं प्रकाशमानत्वे सति परस्मा एव भासमानत्वं पराक्त्वम् । परागपि द्विविधम् शुद्धसत्वज्ञानभेदात् ॥२॥

शुद्धसत्त्वम्

शुद्धसत्त्वंनाम त्रिगुणभिन्नं शुद्धसत्त्वगुणाधिकरणमचिद् द्रव्यम् । तन्नित्यमजडमधः प्रदेशे परिच्छिन्नमूर्ध्वप्रदेशे चान्तरहितम् । "आदित्यवर्णं तमसः परस्तात्" (श्वे. उ०

पराक् एवं प्रत्यक् के भेद से अजड दो प्रकार का होता है । उन दोनों में से जो स्वयं अन्य साधन के बिना स्वयं प्रकाश मान होता हुआ पर को भी विभासित प्रकाशित करता है वह पराक् कहलाता है । शुद्धसत्व एवं ज्ञान के भेद से पराक् भी दो प्रकार का है ॥२॥

शुद्ध सत्व उसे कहते है जो सत्व रज एवं मत रूप तीन गुण वाली प्रकृति से भिन्न होकर भी गुण का अधिकरण आधार स्वरूप शुद्ध सत्त्व हो तथा वह अचिद् द्रव्य है । वह शुद्ध सत्व नित्य है तथा अजड है एवं अधः प्रदेश– एक पाद-विभूति में परिच्छिन्न सीमित है और ऊर्ध्व प्रदेश त्रिपाद विभूति में अन्त रहित अनन्त है । इस शुद्ध सत्व के होने में प्रमाण निम्न है –तमः शब्द से वाच्य प्रकृति मण्डल से पर परात्पर श्रीसाकेत लोक में स्थित आदित्य वर्ण निरतिशय उज्वलादि गुण विशिष्ट दिव्य मंगल विग्रह विशिष्ट सर्वतोधिक महत्व शाली सर्वेश्व

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

३।८) "तद्विष्णोः परमं पदं सदापश्यन्ति सूरयः" (ऋ. १।२२।२०-शु.य. ६।५) इत्यादिश्रुतयस्तत्र प्रमाणभूताः । तदीश्वरसंकल्पान्नित्यमुक्तेश्वराणां भोग्यभोगोपकरणभोगस्थानरूपं भवति । नित्यविभूतिनित्यधामपरमधामपरमव्योमाक्षरधामश्रीसाकेतादिशब्दाः शुद्धसत्त्वपर्यायाः ॥३॥

॥ ज्ञानम् ॥

अर्थप्रकाशो ज्ञानम् । तच्च प्रभावद् द्रव्यगुणात्मकम श्रीरामजी को जानता हूं' सर्व व्यापक सर्वाधार भूत श्रीरामजी के उस परम पद श्रीसाकेत धाम को साधना में सलग्न सूरिवर्ग आविर्भूत गुणाष्टक वाले साधक यानी अपहतपाप्मा सर्वदोष रहित विजर जरारहित विमृत्यु मृत्युरहित विशोक दोषरहित विजिघत्स अशना दोषरहित अपिपास पिपासारहित सत्यकाम एवं सत्य संकल्प रूप आठ गुणों को प्राप्त किये साधक लोक सर्वदा देखते हैं इत्यादि श्रुतियां प्रमाणरूप से मौजुद हैं । वह शुद्ध सत्व ईश्वर के संकल्प से नित्यमुक्त जीव एवं ईश्वर के लिये भोग्य भोग का उपकरण तथा भोग का स्थान यों तीनो ही होता है । नित्य विभूति नित्यधाम परमधाम परमव्योम अक्षरधाम श्रीसाकेतधाम आदि शब्द शुद्ध सत्व शब्द के पर्यायवाची हैं यानी ये सभी शब्द श्रीरामधाम के बोधक हैं ॥३॥

अर्थ विषयों को प्रकाशित करने वाले को ज्ञान कहते हैं वह प्रभा के समान द्रव्यरूप एवं गुणरूप दोनो ही है तथा अजड विभु द्रव्य है । वह ज्ञान ईश्वर एवं नित्य जीवों में सर्वदा विभु

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जडंविभुद्रव्यम् । तच्चेश्वरस्य नित्यानां च सदैवविभुः मुक्तानां बद्धावस्थायां तिरोहितं मुक्तौ विभु बद्धानां तु तिरोहितमेव ॥४॥

ज्ञानं हि नित्यं द्रव्यम् "न हि विज्ञातु र्विज्ञाते र्विपरि लोपो विद्यते" (बृ०४। ३।३०) इति श्रुतेः । "ज्ञानमुत्पन्नम्" "ज्ञानं नष्टम्" इत्यादिव्यवहारस्तु ज्ञानसम्बन्धिसंकोच-विकासावस्थाहेतुक एवेति ध्येयम् । ज्ञानं मतिः प्रज्ञा संवित् धिषणा धीः मनीषा शेमुषी बुद्धिरित्यादयः शब्दा ज्ञान-पर्यायाः ॥५॥

व्यापक असंकुचित रहता है मुक्त जीवों में प्रथम बद्ध अवस्था में तिरोहित आवृत रहता है पर मुक्त अवस्थ में विभु असंकु-चित हो जाता है परन्तु बद्ध जीवों का ज्ञान तो तिरोहित ही रहता है ॥४॥

ज्ञान नाश न होने वाला नित्य द्रव्य है क्योंकि बाह्य एवं आभ्यन्तर के सभी स्वरूपों को अवगत करने वाले विज्ञान रूप विशेष शक्ति को नाश रहित होने से सर्वतो भावसे लोप नाश नहीं होता है इस प्रकार से श्रुति में वर्णन है अतः ज्ञान नित्य सिद्ध होता है । ज्ञान उत्पन्न हुआ' ज्ञान नाश हुआ इत्यादि उत्पन्न एवं नाश सम्बन्धि अनित्य व्यवहार तो ज्ञान सम्बन्धि ज्ञानविषयक संकोच तथा विकास के अवस्था को लेकर के होता है ज्ञान के अनित्य होने से नहीं ज्ञान तो नित्य ही है ऐसा जाननां चाहिये । ज्ञान मति प्रज्ञा संवित् धिषणा धी मनोषा शेमुषी एवं बुद्धि आदि शब्द ज्ञान के पर्यायवाची शब्द हैं ऐसा जानना ।५।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

परप्रकाश्यं जडमित्युक्तं प्राक् । जडं द्विविधं प्रकृतिकालभेदात् । तथा चोक्तं श्रौतसिद्धान्तविन्दुकार श्रीश्रुतानन्दाचार्यचरणैः—

"अचिन्नाम तत्त्वं द्विधाज्ञानशून्यं,
जडञ्चाजडं नैवमिथ्याकदाचित् ।
जडं मिश्रसत्वं तथा कालतत्त्वं,
मनीषाऽजडं शुद्धरूपं च सत्त्वम्" इति ।

पीछले अचित् तत्त्व के विभाग प्रसंग में अजड तथा जड दो विभाग कर जड का लक्षण पर प्रकाश्य कहा गया था वह पर प्रकाश्य जड तत्त्व भी दो प्रकार का होता है प्रकृति तथा काल के भेद से इस तत्त्व के विभाग को श्रौतसिद्धान्त विन्दु कार श्रीश्रुतानन्दाचार्यजी ने निम्न प्रकार से कहा है— जड एवं अजड के भेद से अचित् नाम का तत्त्व दो प्रकार का है एवं वह ज्ञान से शून्य होने पर भी कदापि मिथ्या नहीं है । जड का शुद्ध मिश्र एवं शून्य तीन प्रकार का विकास होता है मिश्र सत्व यानी प्रकृति से महतत्त्व उस से सात्विक राजस तथा तामस भेद से तीन प्रकार का अहंकार तथा सात्विक अहंकर से पांच ज्ञानेन्द्रिय पांच कर्मेन्द्रिय एवं उभयात्मक मन उत्पन्न होते हैं तामस अहंकार से शब्द स्पर्श रूप रस एवं गन्ध पांच तन्मात्राएं तथा पृथिवी अप तेज वायु एवं आकाश पांच महाभूत उत्पन्न होते हैं । राजस अहंकार सात्विक तथा तामस दोनों का ही सहायक होता है । शून्य सत्व से भूत भविष्य आदि काल उत्पन्न होता है । शुद्ध सत्व अजड के रूप

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अत्रमिश्रसत्वपदेनाविद्यामायाद्यपरपर्याया प्रकृतिरुक्ता ।६।

प्रकृतिः

प्रकृतिर्नाम सत्त्वरजस्तमोरूपगुणत्रयाश्ररूपं द्रव्यम् । तत्र सत्वं नाम ज्ञान सुखतदुभयसङ्गोत्पादको गुणः । रजो नाम रागतृष्णाकर्मसङ्गोत्पादको गुणः । तमोनामविपरीत ज्ञानानवधानालस्यनिद्रोत्पादकोगुणः ।।७।।

उक्तञ्च श्रीततत्त्वसमुच्चयकारैराचार्यसार्वभौमैर्भगवद्भिः श्रीराघवानन्दाचार्यैः—

में प्रसिद्ध है वही नित्य विभूति या पर धाम है तथा मनीषा ज्ञान आदि शब्द भी अजड शब्द से व्यवहृत होने हैं । इस श्लोक में आये मिश्र सत्व पद से अविद्या माया आदि पर्याय वाची शब्द वाली प्रकृति को कहा गया है ।।६।।

प्रकृति उसे कहते हैं जो सत्व गुण रजो गुण एवं तमोगुण नाम से प्रसिद्ध तीनो गुणों में आश्रित द्रव्य हो सात्विक राजस तथा तामस इन तीनों गुणों में से जो ज्ञान का उत्पादक या सुख का उत्पादक अथवा ज्ञान सुखात्मक दोनों का उत्पादक हो उसे सत्व गुण कहते हैं । तथा राग तृष्णा या राग तृष्णा रूप दोनों कर्म सम्बन्धी संगती के उत्पादक गुण को रजोगुण कहते हैं । एवं विपरीत उलटा ज्ञान असावधान आलस्य एवं निद्रा आदि के उत्पादक गुण को तमोगुण कहते हैं ।।७।।

तीन गुणों के चर्चा प्रसंग में आचार्य सार्वभौम जगद्गुरु श्रीराघवानन्दाचार्यजीने श्रौतत्तत्त्व समुच्चय नामक प्रवन्ध में कहा है

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

"तत्र सत्वं निर्मलत्वात् प्रकाशकमनामयम् ।
सुखसङ्गेन बध्नाति ज्ञानसङ्गेन चानघ ? ॥
रजो रागात्मकं विद्धि तृष्णासङ्गसमुद्भवम् ।
तन्निबध्नाति कौन्तेय ! कर्म सङ्गेन देहिनम् ॥
तमस्त्वज्ञानं विद्धि मोहनं सर्वदेहिनाम्" (गीता १४।६-८)

इतिभगवद्वचनप्रामाण्यात् सत्वं नाम ज्ञानस्य सुखस्य तदुभयसङ्गस्य च जनको गुणः । रजोनाम रागतृष्णा कर्मणां सङ्गानां जनकोगुणः । तमो नाम विपरीतज्ञानानवधानालस्य निद्राणां जनको गुणः" (श्रीततत्त्व समुच्चयः) इति ॥८॥

निष्पाप अर्जुन ! उन सत्वादि तीन गुणों में निर्मल एवं अनामय रोगादि से रहित सुखजनक एवं ज्ञानादि के प्रकाशक होने से सत्वगुण साधकों को सुख के संगों से एवं ज्ञान के संगों से बांधता है यानी सत्व गुण प्रसंग से साधक सुखी तथा ज्ञानी होता है । हे कौन्तेय ! तृष्णा के संग से समुद्भव रजो गुण को तुम रागात्मक कामना स्वरूप वाला जानो वह साधकों को कर्म संगति में बांध देता है । इसी प्रकार अज्ञान से जायमान तमो गुण को जानो जो सभी प्राणि वर्ग को मोहित कर देता है । इत्यादि भगवान के प्रामाणिक वचनों से यह बोध होता है कि ज्ञान का सुख का या ज्ञान एवं सुख दोनों के संग का उत्पादक जो होता है वह सत्व गुण है । राग तृष्णा एवं कर्म आदि संगों के जनक पैदा करने वाले गुण को रजो गुण कहते हैं । विपरीत उलटा ज्ञान असावधान आलस्य एवं निद्रा आदि के उत्पादक गुण को तमोगुण कहते हैं ॥८॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रलये प्रकृतेस्त्रायोऽपि गुणाः साम्यमापन्ना एव भवन्ति । "तदैक्षत बहुस्याम्" इतीश्वरसङ्कल्पवशात् प्रकृतिर्गुणवैषम्यप्रयुक्तां कार्योन्मुखावस्थामवाप्याव्यक्तपद वाच्या भवति ॥९॥

॥ महत्तत्त्वम् ॥

अव्यक्तपदवाच्यायाः प्रकृतेर्यः प्रथमोविकारः स महान् । स च त्रिविधः । सात्विकराजसतामसभेदात् ।१०।

प्रलय काल में प्रकृति के सत्व रज एवं तम तीनों ही गुण साम्य अवस्था को प्राप्त कर जाते हैं अतः किसी प्रकार की प्रवृत्ति नहीं होती है । जब मैं एक हूं बहुत होजाऊ इस प्रकार से सृष्टि हेतु ईश्वर ने संकल्प किया तो प्रकृति अपने गुणों के विषमता जनित कार्योत्पादकता कार्यों को उत्पन्न करने की अवस्था को प्राप्त कर के अव्यक्त नाम वाली हो जाती है यानी प्रलय में क्षोभ रहित होने से तीनों गुणों के समान अवस्था प्राप्त कर शान्त रूप से स्थित प्रकृति सृष्टि हेतु ईश्वर के संकल्प से क्षोभिता होकर सृष्टि के लिये उद्यतहो जाती है उस समय उसका नाम अव्यक्त होता है जिसके द्वारा महतत्त्व आदि की सृष्टि सम्पन्न होती है ॥९॥

अव्यक्त पद से कथित अव्यक्त नाम वाली प्रकृति का सृष्टि क्रम में जो पहला विकार होता है वह महान् महत्तत्त्व कहलाता हैं तथा सात्विक राजस एवं तामस यानी सत्व गुण रजो गुण तथा तमो गुणों के भेद से महत्तत्त्व भी सात्विक राजस एवं तामस रूप से तीन प्रकार का होता है ॥१०॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

॥ अहङ्कारः ॥

महतः प्रथमो विकारोऽहङ्कारः । सोऽपि सात्विकादि भेदात् त्रिविधः । एते सात्विकराजसतामसाख्या अहङ्काराः क्रमाद् वैकारिकतैजसभूतशब्दैरप्यभिधीयन्ते ॥११॥

॥ एकादशेन्द्रियाणि ॥

राजसाहङ्कारसहकृतात् सात्विकाहङ्कारादेकादशेन्द्रियाणि जायन्ते तानि द्विविधानि । ज्ञानेन्द्रियाणि कर्मेन्द्रियाणि च ॥१२॥

ज्ञानप्रसरणेशक्तानीन्द्रियाणि ज्ञानेन्द्रियाणि । तानिषड् विधानि मनः श्रोत्रं त्वक्चक्षूरसनं घ्राणञ्चेति ।

महत्तत्त्व का पहला विकार अहंकार है । अहंकार भी कारण गुण के अनुरोध से तीनों गुणों से युक्त होता है अतः सात्विक अहंकार राजस अहंकार एवं तामस अहंकार के भेद से तीन प्रकार का होता है । ये सात्विक अहंकार राजस अहंकार तथा तामस अहंकार क्रमश वैकारिक तैजस तथा भूतनाम से भी कहे जाते हैं अर्थात् सात्विक अहंकार को वैकारिक राजस अहंकार को तैजस एवं तामस अहंकार को भूत शब्द से भी प्रसगं या प्रकरणादि में व्यवहार होता है ॥११॥

राजस अहंकार के सहायता से सात्विक अहंकार से ग्यारह इन्द्रियां उत्पन्न होती हैं वे ज्ञानेन्द्रिय एवं कर्मेन्द्रिय के भेद से दो प्रकार के होती हैं ॥१२॥

ज्ञान कराने में समर्थ इन्द्रिय गुणों को ज्ञानेन्द्रिय कहते हैं वे मन श्रोत्र त्वचा आंख जिह्वा एवं नाक के भेद से छ प्रकार के

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तत्रस्मृत्यादिकरणमिन्द्रियं मनः । हृदयदेशवृत्तिः । शब्दमात्रग्रहणसमर्थमिन्द्रियं श्रोत्रम् । कर्णशष्कुलीवृत्तिः । सर्पाणां तु नेत्रगोलोकवृत्तिः । स्पर्शमात्रग्रहण समर्थमिन्द्रियं त्वक् । सर्वशरीरवृत्तिः । रूपमात्रग्रहणसमर्थमिन्द्रियं चक्षुः । नेत्र वृत्तिः । रसमात्रग्रहणसमर्थमिन्द्रियं रसनम् जिह्वाग्र वृत्तिः । गन्धमात्रग्रहणसमर्थमिन्द्रियं घ्राणम् । नासाग्र वृत्तिः ॥१३॥

उच्चारणाद्यन्यतमकर्मसमर्थानीन्द्रियाणि कर्मेन्द्रियाणि । तानि पञ्चविधानि वाक् पाणि पाद पायूपस्थभेदात् ।

हैं । उन छ प्रकार के ज्ञानेन्द्रियों में से स्मृति स्मरण आदि के साधन भूत इन्द्रिय को मन कहते हैं वह हृदय प्रदेश में रहता है । केवल शब्द के ही ग्रहण में समर्थ ईन्द्रिय को श्रोत्र कहते हैं वह मनुष्यादि में कान के साथ सम्युक्त आकाश में रहता है पर सर्प के नेत्र गोलक में रहता है । केवल स्पर्श मात्र के ग्रहण में समर्थ इन्द्रिय को त्वचा कहते हैं वह सर्व शरीर में रहता है । रूप मात्र के ग्रहण में समर्थ इन्द्रिय को चक्षु कहते हैं वह आंख में रहता है । केवल रस के ग्रहण में समर्थ इन्द्रिय को रसना कहते है वह जीभ के अग्रभाग में रहता है । गन्ध मात्र के ग्रहण में समर्थ इन्द्रिय को घ्राण कहते है वह नाक के अग्रभाग में रहता है ॥१३॥

उच्चारण बोलना कार्य करना चलना आदि कार्यों में समर्थ इन्द्रियों को कर्मेन्द्रिय कहते हैं वे वाक् पाणि पाद पायु

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तत्रोच्चारणकरणमिन्द्रियं वाक् । हृदयादिस्थानाष्टक वृत्तिः । शिल्पादिकरणमिन्द्रियं पाणिः । अङ्गुल्यादिवृत्तिः । सञ्चारकरणमिन्द्रियं पादः । चरणादिवृत्तिः । मलोत्सर्जन-करणमिन्द्रियं पायुः । गुदादिवृत्तिः । मैथुनकरणमिन्द्रिय मुपस्थः । मेहनादिवृत्तिः ॥१४॥

॥ तन्मात्रापञ्चकं भूतपञ्चकञ्च ॥

राजसाहङ्कारसहकृतात् तामसाहङ्काराच्छब्दतन्मात्र मुत्पद्यते । तन्मात्रं नाम भूतोपादानं द्रव्यम् । तत्

एवं उपस्थ के भेद से पांच प्रकार के हैं । उन पांच प्रकार के कर्मेन्द्रियों में उच्चारण कार्यों में साधन भूत इन्द्रिय को वाक् वाणी कहते हैं वह हृदय आदि आठ स्थानों पर रहती है । शिल्पी हाथों से विविध कार्य करने में समर्थ इन्द्रिय को पाणि कहते हैं वह अंगुली के अग्रभाग में रहता है । संचरण के साधन रूप इन्द्रिय को पाद कहते हैं वह चरणों में रहता है । मलत्याग करने के साधन रूप इन्द्रिय को पायु कहते हैं वह गुदा में रहता है । मैथुनादि के साधन रूप इन्द्रिय को उपस्थ कहते हैं वह मेहन में रहता है ॥१४॥

राजस अहंकार के सहायता से तामस अहंकार से शब्द तन्मात्रा उत्पन्न होती है । भूतों के पृथिवी अप् तेज वायु एवं आकाश ये पंच महाभूत हैं इन के उपादान जिनसे कोई वस्तु बने या उपन्न हो उसे उपादान कहते हैं विशिष्टाद्वैत वेदान्त

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पञ्चविधं शब्दस्पर्शरूपरसगन्धभेदात् । विशिष्टशब्दादि गुणाश्रयो भूतम् । तदपि पञ्चविधमाकाशवायुतेजोऽपृथिवीभेदात् ॥१५॥

तत्र तामसाहङ्काराव्यवहितोत्तरावस्थाविशिष्टं द्रव्यं शब्दतन्मात्रम् । तस्मादाकाशमुत्पद्यते । रूपरहितं विशिष्टशब्दाधिकरणं द्रव्यमाकाशम् । तच्च शब्द गुणकम् ॥१६॥

प्रक्रिया के अनुसार अविभक्त नाम एवं रूप वाले चित् तथा अचित् शरीर वाले पर ब्रह्म श्रीरामजी ही विभक्त नाम एवं रूप वाले चित् तथा अचित् शरीर वाले का कारण हैं अतः कारण एवं कार्य की एकरूपता होने से सभी नित्य हैं अनित्य या मिथ्या इस मत में कुछ भी नहीं है । तो भूतों के उपादान द्रव्य को तन्मात्रा कहते हैं यानी भूतों के उत्पत्ति से पूर्व सूक्ष्मरूपतया कारण स्वरूप में जो हो उसे तन्मात्रा कहते हैं अर्थात् भूतों के उत्पत्ति कारण का नाम तन्मात्रा है । वह पांच प्रकार का होता है शब्द तन्मात्रा स्पर्श तन्मात्रा रूपतन्मात्रा रस तन्मात्रा एवं गन्ध तन्मात्रा के भेद से । शब्द स्पर्श रूप रस एवं गन्ध रूप विशेष गुणों के आश्रय को भूत कहते हैं । वह भी पांच प्रकार का होता है आकाश वायु तेज जल तथा पृथिवी के भेद से ॥१५॥

पूर्वोक्त उन पांच तन्मात्राओं में से तामस अहंकार से अव्यवहित व्यवधान रहित उत्तर अवस्था में स्थित विशेष द्रव्य को शब्द तन्मात्रा कहते हैं उसी से आकाश उत्पन्न होता है । जो रूप से रहित तथा विशिष्ट शब्द का अधिकरण आधार हो ऐसे द्रव्य को आकाश कहते हैं । वह शब्द गुण वाला होता है ॥१६॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आकाशाव्यवहितोत्तरावस्थाविशिष्टं द्रव्यं स्पर्शतन्मात्रम् तस्माद् वायुरुत्पद्यते । रूपरहितं विशिष्टस्पर्शवद् द्रव्यं वायुः । स च शब्दस्पर्शगुणकः । वायोः स्पर्शोऽनुष्णाशीतोऽस्तीति बोध्यम् । देहधारको वायुविशेषः प्राणः । स पञ्चविधः । प्राणापानव्यानोदानसमानभेदात् । तत्र प्राणो हृदयवृत्तिरपानोगुदवृत्तिर्व्यानः सर्वशरीरवृत्तिरुदानः कण्ठ वृत्तिः समानश्च नाभिवृत्तिरिति बोध्यम् ॥१७॥

शब्द गुण वाले आकाश से अव्यवहित दूसरा कोई व्यवधान रहित उत्तर अवस्था में होने वाले विशिष्ट द्रव्य का नाम स्पर्श तन्मात्रा है उस स्मर्शतन्मात्रा से वायु उत्पन्न होता है । रूप से रहित विशिष्ट स्पर्श वाले द्रव्य को वायु कहते है वह शब्द एवं स्पर्श दो गुण वाला होता है । वायु का स्पर्श अनुष्णाशीत—गरम एवं ठण्डी से रहित सम भाव वाला होता है गरम के संयोग से गरम तथा ठण्डे के संयोग से ठण्डा का अनुभव होता है पर वह स्वभावतः समशीतोष्ण है । देह को धारण करने वाले विशेष प्रकार के वायु यो प्राण कहते है वह प्राण अपान व्यान उदान तथा समान वायु इन नामों एवं भिन्न भिन्न क्रिया से पांच प्रकार का हो जाता है । उन पांच में से प्राण नामक वायु हृदय में रहता है । अपान गुदा प्रदेश में रहता है । व्यान वायु सवशरीर में रहता है । उदान कण्ठ प्रदेश में रहता है एवं समान वायु नाभि प्रदेश में रहता है ऐसा जानना चाहिये ॥१७॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वाय्यव्यवहितोत्तरावस्थाविशिष्टं द्रव्यं रूपतन्मात्रम् । तस्मात्तेजउत्पद्यते । उष्ण स्पर्शवद्द्रव्यं तेजः । तच्च शब्द स्पर्शरूपगुणकम् । तेजसोरूपम् भास्वरं शुक्लमिति बोध्यम् ॥१८॥

तेजोऽव्यवहितोत्तरावस्था विशिष्टं द्रव्यं रसतन्मात्रम् । तस्मादाप उत्पद्यन्ते । शीतस्पर्शवत्य आपः । शब्दस्पर्शरूप-रसा अपां गुणाः । अपां रूपमभास्वरं शुक्लं रसश्च मधुर इति बोध्यम् ॥१९॥

वायु से अव्यवहित उत्तर अवस्था में होने वाले विशिष्ट द्रव्य को रूप तन्मात्रा कहते हैं उससे तेज उत्पन्न होता है । गरम स्पर्श वाले द्रव्य को तेज कहते हैं या गरम स्पर्श तेज का स्वाभाविक धर्म है तो गरम स्पर्श वाले को तेज कहने हैं । वह शब्द स्पर्श तथा रूप ये तीन गुण वाला होता है । तेज का रूप भास्वर—चमकिला चमकदार शुक्ल होता है ऐसा जानना चाहिये ॥१८॥

तेज से व्यवधान रहित उत्तर अवस्था में होने वाले विशिष्ट द्रव्य को रसतन्मात्रा कहते हैं उस रस तन्मात्रा से आप—पानी उत्पन्न होता है । शीत ठण्डास्पर्श वाले द्रव्य को पानी कहते हैं या पानी का स्वाभाविक धर्म शीत स्पर्श है गरम उसका पर सम्पृक्त औपाधिक है तो शीत स्पर्श वाले को पानी कहते हैं । शब्द स्पर्श रूप एवं रस पानी के गुण हैं । पानी का रूप अभास्वर नहीं चमकने वाला शुक्ल है तथा मधुर रस है ऐसा जान ना चाहिये ॥१९॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अवव्यवहितोत्तरावस्था विशिष्टं द्रष्यं गन्धतन्मात्रम् । तस्मात् पृथिव्युत्पद्यते विशिष्टगन्धवद् द्रव्यं पृथिवी । सा च शब्दादिगुणपञ्चकशालिनी । पृथिव्यां स्पर्शोऽनुष्णाशीतो रूपं शुक्लरक्तकृष्णपीतेति चतुर्विधं रसो मधुराम्ललवणकटुक षायतिक्तभेदात् षड्विधोगन्धो सुरभ्यसुरभीतिद्विविधः । तत्र रूपमभास्वरशुक्लमिति बोध्यम् । पृथिव्या रूपरसगन्ध स्पर्शाः पाकनिमित्तकाः ॥२०॥

पानी से अव्यवहित उत्तर काल में होने वाला द्रव्य विशेष को गन्ध तन्मात्रा कहते हैं उससे पृथिवी उत्पन्न होती है । विशिष्ट गन्ध से युक्त द्रव्य को पृथिवी कहते हैं यानी गन्ध वाले द्रव्य को पृथिवी जानना वह शब्द स्पर्श रूप रस एवं गन्ध इन पांचों गुणों से युक्त है । पृथिवी में अनुष्णाशीत स्पर्श रहता है अर्थात पृथिवी का स्पर्श गरम भी नहीं तथा ठण्डा भी नहीं समभाव का होता है शीत एवं ऊष्ण स्पर्श परौयाधिक हैं यानी अग्नि आदि के संयोग से गरम तथा पानी के संयोग से ठण्डा का अनुभव होता है । पृथिवी में शुक्ल रक्त कृष्ण एवं पीत के भेद से चार प्रकार का रूप होता है । और मधुर आम्ल लवण कटु कषाय एवं तिक्त के भेद से छ प्रकार का रस होता है तथा सुरभी सुगन्ध एवं असुरभी दुर्गन्ध के भेद से दो प्रकार का गन्ध होता हैं । पृथिवी में अभास्वर शुक्ल रूप होता है । पृथिवी में स्थित रूप रस गन्ध एवं स्पर्श पाक से जायमान होते हैं स्वतः नहीं ॥२०॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वाय्यव्यवहितोत्तरावस्थाविशिष्टं द्रव्यं रूपतन्मात्रम् । तस्मात्तेजउत्पद्यते । उष्ण स्पर्शवद्द्रव्यं तेजः । तच्च शब्द स्पर्शरूपगुणकम् । तेजसोरूपम् भास्वरं शुक्लमिति बोध्यम् ॥१८॥

तेजोऽव्यवहितोत्तरावस्था विशिष्टं द्रव्यं रसतन्मात्रम् । तस्मादाप उत्पद्यन्ते । शीतस्पर्शवत्य आपः । शब्दस्पर्शरूप-रसा अपां गुणाः । अपां रूपमभास्वरं शुक्लं रसश्च मधुर इति बोध्यम् ॥१९॥

वायु से अव्यवहित उत्तर अवस्था में होने वाले विशिष्ट द्रव्य को रूप तन्मात्रा कहते हैं उससे तेज उत्पन्न होता है । गरम स्पर्श वाले द्रव्य को तेज कहते हैं या गरम स्पर्श तेज का स्वाभाविक धर्म है तो गरम स्पर्श वाले को तेज कहने हैं । वह शब्द स्पर्श तथा रूप ये तीन गुण वाला होता है । तेज का रूप भास्वर—चमकिला चमकदार शुक्ल होता है ऐसा जानना चाहिये ॥१८॥

तेज से व्यवधान रहित उत्तर अवस्था में होने वाले विशिष्ट द्रव्य को रसतन्मात्रा कहते हैं उस रस तन्मात्रा से आप—पानी उत्पन्न होता है । शीत ठण्डास्पर्श वाले द्रव्य को पानी कहते हैं या पानी का स्वाभाविक धर्म शीत स्पर्श है गरम उसका पर सम्पृक्त औपाधिक है तो शीत स्पर्श वाले को पानी कहते हैं । शब्द स्पर्श रूप एवं रस पानी के गुण हैं । पानी का रूप अभास्वर नहीं चमकने वाला शुक्ल है तथा मधुर रस है ऐसा जान ना चाहिये ॥१९॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अवव्यवहितोत्तरावस्था विशिष्टं द्रष्यं गन्धतन्मात्रम् । तस्मात् पृथिव्युत्पद्यते विशिष्टगन्धवद् द्रव्यं पृथिवी । सा च शब्दादिगुणपञ्चकशालिनी । पृथिव्यां स्पर्शोऽनुष्णाशीतो रूपं शुक्लरक्तकृष्णपीतेति चतुर्विधं रसो मधुराम्ललवणकटुक पायतिक्तभेदात् षड्विधोगन्धो सुरभ्यसुरभीतिद्विविधः । तत्र रूपमभास्वरशुक्लमिति बोध्यम् । पृथिव्या रूपरसगन्ध स्पर्शाः पाकनिमित्तकाः ॥२०॥

पानी से अव्यवहित उत्तर काल में होने वाला द्रव्य विशेष को गन्ध तन्मात्रा कहते हैं उससे पृथिवी उत्पन्न होती है । विशिष्ट गन्ध से युक्त द्रव्य को पृथिवी कहते हैं यानी गन्ध वाले द्रव्य को पृथिवी जानना वह शब्द स्पर्श रूप रस एवं गन्ध इन पांचों गुणों से युक्त है । पृथिवी में अनुष्णाशीत स्पर्श रहता है अर्थात पृथिवी का स्पर्श गरम भी नहीं तथा ठण्डा भी नहीं समभाव का होता है शीत एवं ऊष्ण स्पर्श परौयाधिक हैं यानी अग्नि आदि के संयोग से गरम तथा पानी के संयोग से ठण्डा का अनुभव होता है । पृथिवी में शुक्ल रक्त कृष्ण एवं पीत के भेद से चार प्रकार का रूप होता है । और मधुर आम्ल लवण कटु कषाय एवं तिक्त के भेद से छ प्रकार का रस होता है तथा सुरभी सुगन्ध एवं असुरभी दुर्गन्ध के भेद से दो प्रकार का गन्ध होता हैं । पृथिवी में अभास्वर शुक्ल रूप होता है । पृथिवी में स्थित रूप रस गन्ध एवं स्पर्श पाक से जायमान होते हैं स्वतः नहीं ॥२०॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

५ पञ्चीकरणम् ५

सर्वेश्वरोभगवान् श्रीरामोभूतसृष्टिं विधायैकैकस्य भूतस्य समानभागद्वयं कृत्वैकं विहायापरस्य समानभागच तुष्टयं विधायैकैकतदर्धातिरिक्तेषु भूतार्धेषु संयोजयति । एतदेव भूतानां पञ्चीकरणम् ॥२१॥

अत एवाकाशादिषु सर्वेषु भूतेषु शब्दादीनां सर्वेषां गुणानामुपलब्धिः । इत्थं सर्वभूतेषु सर्वभूतानां विद्यमानत्वेऽपि पृथिव्यादिव्यपदेशः स्वभागस्यभूयस्त्वादपरभागस्य

सृष्टि के प्रारंभ काल में सर्वेश्वर भगवान् श्रीरामचन्द्रजी पृथिवी अप तेज वायु एवं आकाश इन पांच भूतों की सृष्टि कर के एक एक पृथिवी आदि पांचों भूतों का समान समान रूपसे दो दो भाग कर के उनमें से एक एक भाग को छोडकर दूसरे भाग के समान रूप से चार चार भाग कर के उन पांचों भूतों के आधेभाग में पृथिवी आदि के चतुर्थभाग को मिला देते हैं इसी प्रक्रिया को भूतों की पञ्चीकरण प्रक्रिया कहते हैं ॥२१॥

इसीलिये पंचीकरण प्रक्रिया से पांचों भूतों का मिश्रण है अतः आकाश वायु तेज जल पृथिवी सभी पांचों भूतों में शब्द स्पर्श रूप सर एवं गन्ध सभी गुणों की उपलब्धि होती है । इस पंचीकरण प्रक्रियानुसार आकाशादि पांचों भूतों में पांचों के रहने पर भी एक एक भूत में पृथिवी जल आदि का व्यवहार पृथिवी आदि का भाग अधिक अन्य जलादि का भाग कम होने से होता है ऐसा जानना चाहिये । वेद छान्दोग्य उपनिषद्प्रभृति में त्रिवृत करण प्रक्रिया का उपदेश है वह पंचीकर एवं सप्तीकरण

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

શ્રીસીતારામાભ્યાં નમઃ

જગદ્‌ગુરુ શ્રીરામાનન્દાચાર્ય શ્રીયોગિરાજજીના
ચતુર્થ પુણ્યતિથિના ઉપલક્ષ્યમાં

શ્રીમદ્‌ભાગવત પારાયણ

એવં

પ્રવચનજ્ઞાન યજ્ઞ

તથા

શ્રીરામમહાયજ્ઞનું આયોજન

દરરોજના યજમાનો

દિ૦૧૦।૮।૯૩	મંગલવાર	શ્રીવાડીલાલ હીરાલાલ પટેલ (ઝલક મેડિકલસ્ટોર્સ)
,, ૧૧।૮।૯૩	બુધવાર	શ્રીઈલાબેન જીતેન્દ્રભાઈપટેલ
,, ૧૨।૮।૯૩	ગુરુવાર	શ્રીઉષાબેન ચંદુભાઈ પટેળ
,, ૧૩।૮।૯૩	શુક્રવાર	શ્રીગિરીશભાઈવિશ્વરામઠક્કર
,, ૧૪।૮।૯૩	શનિવાર	શ્રીરેણુકાબેન રતિચન્દ્રશાસ્ત્રી
,, ૧૫।૮।૯૩	રવિવાર	ખત્રી ડાહ્યાલાલધરમાજી
,, ૧૬।૮।૯૩	સોમવાર	શ્રીસંદીપભચુભાઈ નિમ્બાક
,, ૧૭।૮।૯૩	મંગલવાર	શ્રીઈશ્વરભાઈ વજેરામ ભાઈ વારડે

તા. ક. રવિવાર તા૦ ૧૫।૮।૯૩ સાંજે ૬ વાગે નન્દ મહોત્સ સત્સંગમંડલની માતાઓ ઉજવશે.

૧ શ્રીરામમહાયજ્ઞ પ્રારમ્ભ તા૦૧૦–૮–૯૩ મંગલવારે ૮–૩૦

૨ યજ્ઞની પૂર્ણાહુતિ કુસોત્પાટિનીઅમાસનાં દિવસે સવારે ૯–૩૦ વાગ્યે

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

૩ દરરોજ યજ્ઞનો સમય ૮–૩૦ થી ૯–૩૦ વાગ્યે

૪ કથા પ્રારંભ શ્રાવણ વદ ૮ તા. ૧૦–૮–૯૩ મંગલવારે સવારે ૯–૩૦ વાગ્યે

૫ પ્રવચનનો સમય સવારે ૧૦ થી ૧૨–૦૦ સાંજે ૪ થી ૬–૩૦ વાગ્યે

૬ કથાની પૂર્ણાહુતિ શ્રાવણવદ અમાસ તા૦ ૧૭–૮–૯૩ મંગલવારે સાંજે ૬–૩૦ વાગ્યે

૭ યજ્ઞના આચાર્ય આચાર્યપીઠના ધર્માધિકારી શ્રીશરચ્ચન્દ્ર શાસ્ત્રી છે.

૮ જન્માષ્ટમી તા.૧૦–૮–૯૩ મંગલવારે છે. દર વર્ષ પ્રમાણે રાત્રિમાં ઉત્સવ ઉજવાશે

ψ આયોજક ψ

શ્રીકોસલેન્દ્રસત્સંગમંડળ

જગદ્‌ગુરુ શ્રીરામાનન્દાચાર્યપીઠ ચોક

આચાર્યપીઠ

સરખેજરોડ અહમદાબાદ–૩૮૦૦૦૭

સમસ્ત જનતાને સહર્ષ પધારી તન મન ધન થી મહદ્ રૂપથવા આમંત્રણ છે.

કથાસ્થલ :–જગદ્‌ગુરુશ્રીરામાનન્દાચાર્યપીઠ–મકાવન

શ્રીકોસલેન્દ્રમઠ–શ્રીરામજીમન્દિર સરખેજરોડ

પાલડી અહમદાબાદ–૭

તા. ક. ઠિ૦ ૧૮–૮–૯૩ થી ૧૬–૯–૯૩ સુધી પુરુષોત્તમમાસના ઉપલક્ષ્યમાં આચાર્યશ્રીનું પ્રવચન થશે સમય સાયં ૬ થી ૭

શ્રીરામાનન્દાચાર્યપીઠશ્રીકોશમઠકે ધર્મપ્રચારવિભાગસેધર્મપ્રચારાર્થપ્રકાશિત

ψ મુદ્રક–શ્રીઆનન્દભાષ્યમુદ્રણાલય ψ

આચાર્યપીઠ

શ્રીકોસલેન્દ્રમઠ પો. પાલડી, અહમદાબાદ–૩૮૦૦૦૭

પ્રે. સં. પ્રતિ શ્રી.....

(NEPAL)

૨૯૭ પુસ્તકાલય વાલ્મીકિ અધ્યયન સંસ્થાન કાઠમાણ્ડૂ નેપાલ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu